नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
YouTube

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 04, अंक 172, नई दिल्ली, रविवार 27 सितम्बर 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सफलता केवल मंजिल तक पहुँचने में नहीं, बल्कि हर दिन स्वयं को पहले से बेहतर बनाने के निरंतर प्रयास में छिपी होती है।

03 जब भगवान विष्णु को भी अदला का बदला चुकाना पड़ता है तो तेरी-मेरी क्या बुनियाद?
06 मोहल्ले से बाजार तक: बदलती जीवनशैली
08 मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने एमएमडीआर संशोधित कानून के पक्ष में विपक्ष को लताड़ा

परिवहन विशेष समाचार पत्र को जिस तरह आप लोगों के सहयोग लगातार पिछले 3 वर्षों से प्राप्त हुआ और दिन प्रतिदिन आपकी आवाज को आगे पहुंचाने में आपका सहयोगी बना उसको देखते हुए परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रबंधक मंडल और ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज़ लिमिटेड कंपनी द्वारा जनहित, जनकल्याण जनसूचना और जानकारी को और तेजी से भारत सरकार और राज्य सरकारों के साथ सभी राजनीतिक संगठनों को सबसे पहले पहुंचाने के उद्देश्य से अक्टूबर माह से जनता की आवाज का अपना चैनल "परिवहन विशेष न्यूज़ दूरदर्शन" शुरू करने का निर्णय लिया है।

जल्द आपके बीच में....

परिवहन विशेष न्यूज़ दूरदर्शन

बड़ी खुशखबरी! अब आपकी आवाज गूंजेगी पूरी दुनिया में
परिवहन विशेष समाचार पत्र के सफल 3 वर्षों के बाद अब नई क्रांति

आशा करते हैं जैसे आपने आज के इस दौर मे "परिवहन विशेष समाचार पत्रों" को इतना आगे ले कर जाने में सहयोग दिया उसी प्रकार हमारे द्वारा आपकी आवाज बनने के लिए शुरू किए जा रहे "परिवहन विशेष न्यूज़ दूरदर्शन" को विश्व का सबसे बड़ा चैनल बनवाएंगे।

संजय बाठला
मुख्य संपादक

बुराड़ी में दोहरा धमाका! एक साथ शुरू हुआ ATS और EV चार्जिंग हब - दिल्ली को मिला ग्रीन और सेफ ट्रांसपोर्ट का तोहफा

CM रेखा गुप्ता के कर-कमलों से लोकार्पण, सांसद मनोज तिवारी और परिवहन मंत्री डॉ. पंकज सिंह रहे मौजूद - एक ही परिसर में फिटनेस जांच और चार्जिंग की सुविधा

प्रदूषण खत्म, सुरक्षा पक्की - अब दिल्ली की सड़कों पर दौड़ेंगे सिर्फ फिट और इलेक्ट्रिक वाहन

रिपोर्ट:- केके छाबड़ा परिवहन विशेष समाचार पत्र

प्रस्तावना: क्या है आज की बड़ी खबर? 26 सितंबर 2026 को दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग ने बुराड़ी वाहन जांच शाखा में दो बड़े प्रोजेक्ट का एक साथ लोकार्पण किया है:

1. स्वचालित परीक्षण केंद्र (ATS - Automated Testing Station)
2. इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग फैसिलिटी (EV Charging Hub)

यह दिल्ली का तीसरा ATS है। इससे पहले तेहखंड (दक्षिण दिल्ली) और नंद नगरी (पूर्वी दिल्ली) में दो ATS शुरू हो चुके हैं।

तथ्य और आधिकारिक जानकारी - पट्टिका और बयान से:

A. लोकार्पण पट्टिका के अनुसार (फोटो साक्ष्य):

- स्थान: स्वचालित परीक्षण केंद्र, बुराड़ी
- लोकार्पण कर्ता: श्रीमती रेखा गुप्ता, माननीय मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार
- गरिमामयी उपस्थिति:
- डॉ. पंकज कुमार सिंह - मंत्री, परिवहन, स्वास्थ्य एवं सूचना प्रौद्योगिकी
- श्री मनोज तिवारी - सांसद, उत्तर-पूर्वी क्षेत्र
- श्री राजीव वर्मा, भा.प्र.से. - मुख्य सचिव
- श्रीमती निहारिका राय, भा.प्र.से. - सचिव एवं आयुक्त (परिवहन)
- दिनांक: 26 सितंबर 2026

B. CM रेखा गुप्ता का वीडियो बयान (मूल ऑडियो का सार): CM ने कहा - "मात्र डेढ़ साल के छोटे कार्यकाल में दिल्ली का तीसरा ATS खुला है। ये ना केवल कमर्शियल वाहनों को फिटनेस सर्टिफिकेट देगा, बल्कि दिल्ली में प्रदूषण को खत्म करने की दिशा में बहुत मजबूत कदम है। पहले दिल्ली में इस तरह के ATS पर कभी काम नहीं हुआ, जो प्रदूषण का बड़ा कारण था। अब 1 लाख वाहन एक स्टेशन पर और 2.5 लाख वाहन तीनों स्टेशनों पर हर साल फिटनेस करा पाएँगे।"

विस्तृत विश्लेषण - जनता के लिए क्या बदला?

1. ATS से क्या फायदा? - जनहित का पहला पहलू

*पहले क्या होता था?
*अब क्या होगा?

फिटनेस के लिए झड़ौदा कलां, बुराड़ी के पुराने सेंटर में लंबी लाइन, दलालों का बोलबाला, मैनुअल जांच पूरी तरह कंप्यूटराइज्ड जांच - ब्रेक, सस्पेंशन, हेडलाइट, साइड-स्लिप, एमिशन, अंडरबॉडी - 10 टेस्ट ऑटोमेटिक

1 वाहन की जांच में 1-2 दिन 1 वाहन की जांच में 15-20 मिनट

अनफिट वाहन भी पैसे देकर पास हो जाते थे कोई मानवीय हस्तक्षेप नहीं, मशीन फेल करेगी तो सड़क पर नहीं चलेगा

सीधा असर: अनफिट ऑटो, बस, ट्रक सड़क पर नहीं आएंगे = एक्सीडेंट कम + प्रदूषण कम।

2. EV चार्जिंग से क्या फायदा? - जनहित का दूसरा पहलू

- क्षमता: प्रत्येक हब पर 4 चार्जर, 240 KW का प्रत्येक - एक साथ 4 बड़ी E-Bus या 8-10 E-Car चार्ज।
- बैकअप: 1600 KVA का सब-स्टेशन, ट्रांसफार्मर, HT/LT पैनल - बिजली जाने पर भी चार्जिंग जारी।
- लोकेशन: बुराड़ी ATS और आनंद विहार ISBT के पास - जहाँ DTC की सबसे ज्यादा बसें आती-जाती हैं। इससे DTC की 5,088 इलेक्ट्रिक बसों को रोजाना चार्जिंग मिलेगी।
- आम जनता के लिए: निजी EV मालिक भी इन स्टेशनों पर कमर्शियल रेट पर चार्ज करा सकेंगे - रेंज एंग्जाइटी खत्म।

3. परिवहन विभाग की बड़ी उपलब्धि:

- नवंबर 2025 में शिलान्यास, सितंबर 2026 में लोकार्पण - 10 महीने में प्रोजेक्ट पूरा - CM ने अधिकारियों को बधाई दी।
- दिल्ली सरकार का लक्ष्य: 2028 तक 14,000 बसें, जिसमें 80% इलेक्ट्रिक।
- साथ ही दिल्ली-रेवाड़ी E-Bus सेवा भी शुरू - 86 KM, किराया 153 रु., जीरो एमिशन।

संपादकीय निष्कर्ष - परिवहन विशेष की अपील: यह दोहरा उद्घाटन केवल एक सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि दिल्ली के ट्रांसपोर्ट मॉडल में क्रांति है।

एक तरफ ATS = सुरक्षा और ईमानदारी

दूसरी तरफ EV चार्जिंग = हरियाली और बचत

CM रेखा गुप्ता और सांसद मनोज तिवारी की जोड़ी ने उत्तर-पूर्वी दिल्ली के ट्रांसपोर्टरों को सीधा संदेश दिया है - अब फिटनेस के लिए बाहर नहीं भटकना, चार्जिंग के लिए इंतजार नहीं करना।

जनता से अपील:

1. अपने कमर्शियल वाहन की फिटनेस समय पर बुराड़ी ATS में कराएं।
2. EV वाहन अपनाएं - सरकार सब्सिडी और चार्जिंग दोनों दे रही है।
3. अनफिट वाहन की शिकायत 1076 पर करें।

> जानकारी ही सुरक्षा है - फिट वाहन, हिट दिल्ली।

रिपोर्ट: वीडियो और पट्टिका साक्ष्य पर आधारित

प्रकाशक: संजय कुमार बाठला।
मुख्य संपादक, परिवहन विशेष

प्यार देकर जो हमें विदा हुए संसार से, आओ उनका स्वागत करें आज से

पितृ पक्ष पर सभी पुरखों को सादर नमन - श्रद्धा, संस्कार और स्मृति का पर्व

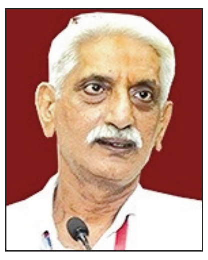

कविता-नमन:

> प्यार देकर जो हमें विदा हुए संसार से,
> आओ उनका स्वागत करें आज से,
> वो हुए पुरखों में शामिल जो कभी थे साथ में,
> आज से नमन करेंगे हम मन के द्वार से।
> सभी पितरों को सादर नमन।

पितरों का आशीर्वाद ही परिवार की नींव है

भारतीय संस्कृति में कहा गया है - "पितृ देवो भव"। जिस तरह परिवहन बिना इंजन के नहीं चल सकता, वैसे ही परिवार बिना पुरखों के आशीर्वाद के आगे नहीं बढ़ सकता।

पितृ पक्ष केवल तर्पण नहीं, कृतज्ञता व्यक्त करने का समय है। जिन हाथों ने हमें चलना सिखाया, जिन कंधों पर हम बड़े हुए, जो आज भौतिक रूप से हमारे साथ नहीं हैं पर संस्कारों के रूप में हमारे साथ हैं - उनका स्मरण ही सच्ची श्रद्धा है।

संदेश: आज जब समाज तेजी से भाग रहा है, तो हमें रुककर अपने मूल को नमन करना चाहिए।

लेखक परिचय:
संजय कुमार बाठला
- प्रधान संपादक, परिवहन विशेष समाचार पत्र
- चेयरमैन, ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन (पंजीकृत)
- चेयरमैन, टेंपल ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
- पूर्व छात्र नेता, दिल्ली विश्वविद्यालय (1979-1982)

संपादकीय आह्वान: इस पितृ पक्ष पर एक दीया अपने पितरों के नाम जरूर जलाएं - उनका आशीर्वाद ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार

"फर्जी स्टॉक ट्रेनिंग जाल: साइबर अपराधी निवेशकों को बड़े पैमाने पर फंसा रहे हैं"

पिंकी कुंडू

उत्तर प्रदेश STF ने 37 वर्षीय विवेक कुमार सिंह को गिरफ्तार किया है, जिसने ₹7.29 करोड़ के घोटाले की साजिश रची। उसने फर्जी स्टॉक ट्रेडिंग और IPO ट्रेनिंग के नाम पर हजारों निवेशकों को ठगा। गिरोह ने इंस्टाग्राम विज्ञापनों, व्हाट्सऐप ग्रुप्स और एक फर्जी ऐप ("ACI Century") का इस्तेमाल किया। पैसों को शेल अकाउंट्स के जरिए घुमाकर USDT क्रिप्टोकरेंसी में बदलकर दुबई भेजा गया।

केस:

- गिरफ्तार आरोपी: विवेक कुमार सिंह (37), मूल निवासी देहरादून, वर्तमान में गुरुग्राम में रह रहा था।
- गिरफ्तारी स्थान: राजपुर क्षेत्र, देहरादून, उत्तराखंड।
- धोखाधड़ी राशि: ₹7.29 करोड़ (3,087 ऑनलाइन शिकायतें NCRP पोर्टल पर दर्ज)।
- शिकायत स्रोत: लखनऊ साइबर क्राइम पुलिस स्टेशन में अपूर्वा राय की शिकायत पर मामला दर्ज।
- बरामद सामान: लैपटॉप, 2 मोबाइल फोन, 2 सिम कार्ड, 2 राउटर, ₹15,500 नकद।

कार्यप्रणाली (Modus Operandi):

- फर्जी विज्ञापन: इंस्टाग्राम/फेसबुक पर "स्टॉक मार्केट एनालिसिस ट्रेनिंग" के नाम पर।
- व्हाट्सऐप ग्रुप्स: पीड़ितों को "VIP9-6 ACI Exclusive Guidance Group" में जोड़ा गया।
- झूठे सबूत: फर्जी प्रॉफिट स्क्रीनशॉट साझा कर भरोसा बनाया।
- फर्जी ऐप: पीड़ितों को ACI Century App डाउनलोड करने को कहा गया, जिसमें नकली डैशबोर्ड दिखाए गए।
- मनी ट्रेल:
  - o पीड़ितों से पैसे शेल कंपनियों के खातों में जमा कराए गए।
  - o कई खातों के जरिए पैसे घुमाए गए।
  - o USDT क्रिप्टोकरेंसी में बदला गया।
  - o दुबई स्थित सहयोगियों को भेजा गया।

जोखिम और चेतावनी संकेत:

- स्टॉक/IPO निवेश में गारंटीड हाई रिटर्न का दावा।
- सोशल मीडिया पर बिना SEBI रजिस्ट्रेशन के ट्रेनिंग ऑफर।
- नकली डैशबोर्ड पर दिखाए गए प्रॉफिट।
- कई खातों में पैसे ट्रांसफर करने या अज्ञात ऐप डाउनलोड करने की मांग।

नागरिक सलाह:

- स्टॉक ट्रेडिंग प्लेटफ़ॉर्म की पुष्टि करें: केवल SEBI-रजिस्टर्ड ब्रोकर्स और आधिकारिक ऐप्स का उपयोग करें।
- सोशल मीडिया ट्रेनिंग विज्ञापनों से बचें: इंस्टाग्राम/फेसबुक पर धोखाधड़ी फैल रही है।
- निवेश से पहले प्रमाण जांचें: कंपनी विवरण और SEBI रजिस्ट्रेशन क्रॉस-चेक करें।
- तुरंत रिपोर्ट करें: हेल्पलाइन 1930 पर कॉल करें या NCRP पोर्टल पर शिकायत दर्ज करें।
- जागरूकता फैलाएँ: युवा निवेशक और सेवानिवृत्त लोग अक्सर निशाना बनते हैं।

दिल्ली में सड़कों पर दौड़ रहा मौत का खतरा - बिना सर्विस स्टेशन के मिल रहे ट्रेड सर्टिफिकेट

BOCI ने ट्रांसपोर्ट कमिश्नर को भेजा अर्जेंट रिमाइंडर - 2008 की राजपत्रित अधिसूचना के उल्लंघन से स्कूली बच्चों की जान जोखिम में, आगजनी और सत्य निकेतन हादसे के बाद भी विभाग मौन

रिपोर्ट गुरमीत सिंह तनेजा
प्रस्तुतकर्ता विशेष संवाददाता
परिवहन विशेष समाचार पत्र

दिल्ली में यात्री बसों, विशेषकर स्कूल बसों की सुरक्षा को लेकर एक गंभीर लापरवाही सामने आई है। बस एंड कार ऑपरेटर्स कॉन्फेडरेशन ऑफ इंडिया (BOCI) ने परिवहन आयुक्त, दिल्ली सरकार को पत्र लिखकर परिपत्र संख्या F-23(139)/2007/Tpt/Ops/1971-85 दिनांक 25.03.2008 के लगातार उल्लंघन पर कड़ा एतराज जताया है और 10 मिनट का समय मांगा है।

क्या है 2008 की वह अधिसूचना? 25 मार्च 2008 को जारी इस राजपत्रित परिपत्र में स्पष्ट प्रावधान था कि किसी भी बस ऑपरेटर को ट्रेड सर्टिफिकेट तभी दिया जाए जब उसके पास मानकों के अनुरूप सर्विस स्टेशन, वॉशिंग/ग्रीसिंग की सुविधा, प्रशिक्षित मैनपावर और सुरक्षा उपकरण मौजूद हों। उद्देश्य था - सड़क पर चलने से पहले बस पूरी तरह से फिट हो।

जमीनी हकीकत - कागजों पर फिट, सड़क पर अनफिट: BOCI के अनुसार, दिल्ली में इस अधिसूचना का खुला उल्लंघन हो रहा है। बसों की सर्विसिंग बिना सुविधा वाले, अनधिकृत और असुरक्षित स्थानों पर हो रही है। न वॉशिंग प्लांट है, न प्रशिक्षित मैकेनिक, फिर भी धड़ल्ले से ट्रेड सर्टिफिकेट जारी और नवीनीकृत किए जा रहे हैं।

07 जुलाई 2026 की बैठक के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं: BOCI प्रतिनिधिमंडल ने 07 जुलाई 2026 को परिवहन आयुक्त से मुलाकात की थी। तब आयुक्त ने वरिष्ठ अधिकारियों को निरीक्षण कर तथ्यों की जांच के निर्देश दिए थे, लेकिन संगठन का कहना है कि जमीनी स्थिति आज भी जस की तस है।

दो बड़े हादसे - चेतावनी के बाद भी नहीं जागा विभाग: पत्र में दो दर्दनाक घटनाओं का जिक्र कर सिस्टम की लापरवाही पर सवाल उठाया गया है:

1. बसों में आग की घटनाएं: हाल के महीनों में बसों में आग लगने से यात्रियों के जिंदा जलने की कई घटनाएं हुई हैं, जिनमें कीमती जानें गईं।
2. सत्य निकेतन हादसा - 06.09.2026: सत्य निकेतन में बिल्डिंग ढहने से 7 छात्रों की मौत। यह घटना भी अवैध पार्किंग और बिना मानक वाले सर्विस सेंटरों से जुड़ी बताई जा रही है।

BOCI ने लिखा है - "हमारी व्यवस्था में किसी हादसे के बाद केवल जांच होती है, रोकथाम नहीं। यह हम सभी का कर्तव्य है कि दूसरे हादसे से पहले जरूरी कदम उठाए जाएं।"

मुख्य सवाल जो उठ रहे हैं:

- जब 2008 की अधिसूचना आज भी वैध है, तो उसका पालन क्यों नहीं हो रहा?
- बिना सर्विस स्टेशन के ट्रेड सर्टिफिकेट जारी करना किसकी जिम्मेदारी और किसके संरक्षण में हो रहा है?
- क्या विभाग किसी बड़े हादसे का इंतजार कर रहा है?
- स्कूली बच्चों की सुरक्षा से बड़ा कोई नियम नहीं, फिर बार-बार के पत्रों पर कार्रवाई क्यों नहीं?

BOCI की मांग: संगठन ने मांग की है कि 2008 की अधिसूचना का सख्ती से पालन कराया जाए, सभी बस डिपो/वर्कशॉप का भौतिक निरीक्षण हो, बिना मानक वाले ट्रेड सर्टिफिकेट रद्द किए जाएं और दोषी अधिकारियों पर जिम्मेदारी तय हो।

यह मामला केवल एक संगठन का नहीं, बल्कि दिल्ली के लाखों यात्रियों और स्कूली बच्चों की सुरक्षा से जुड़ा जनहित का मुद्दा है।

खेतों से थाली तक फैला ज़हर का नेटवर्क - कीटनाशक से किसान की मौत ने खोली सिस्टम की पोल

अमरोहा में गजेंद्र सिंह की मौत महज हादसा नहीं, हमारी भोजन श्रृंखला पर खतरे की घंटी – दूध, अनाज, सब्जियों में HCH/DDT नाराः सुरक्षित कृषि सुरक्षित भोजन सुरक्षित जीवन

संजय सिंह - गोंदिया से विशेष विश्लेषण
प्रस्तुतकर्ता विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र

अमरोहा में क्या हुआ ?

- घटनाः मंडी धनौरा, जेथल मुस्तकम गांव, अमरोहा (UP) - बुधवार को खेत में कीटनाशक छिड़काव करते समय किसान गजेंद्र सिंह की हालत बिगड़ी, मेरठ रेफर, शुक्रवार तड़के मौत। पीछे एक बेटा, दो अविवाहित बेटियां। थाना प्रभारी सत्येंद्र सिरोहा ने पोस्टमार्टम की पुष्टि की।

- सवालः यह मौत नहीं, हत्या है - असुरक्षित कीटनाशक व्यवस्था की।

तथ्य और रिपोर्ट - जहर कैसे पहुंचा थाली तक ?

1. खेत से भूजल तकः

- देश में हर साल 70,000 टन कीटनाशक जमीन में रिसकर भूजल और नदियों को प्रदूषित कर रहा है।

2. दूध में जहरः

- 5 प्रमुख शहरों में 1200 दूध के नमूनों की जांच - HCH, DDT, एंडोसल्फान, साइपरमेथ्रिन, क्लोरपाइरीफॉस के अवशेष तय सीमा से अधिक। दूषित चारा खाने से पशुओं के दूध में जहर।

3. कैंसर कनेक्शनः

- ICMR की रिपोर्ट में कीटनाशक और कैंसर का सीधा संबंध।

- हरियाणा विधानसभा में आंकड़ेः पिछले वर्ष सबसे अधिक कैंसर मौतें फरीदाबाद में।

- पंजाब के बरनाला जिले में हालात इतने बिगड़े कि हजारों महिलाओं ने जैविक खेती की मुहिम शुरू की।

- बच्चों में दूध के माध्यम से कैंसर जोखिम अमेरिकी EPA मानकों से भी अधिक।

परिवहन विशेष का विश्लेषण - 3 मुख्य बिंदु

1. एक दौर था जब गांव शहर से ज्यादा स्वस्थ थे, आज उल्टा हैः अंधाधुंध रासायनिक दौड़ ने मिट्टी, जल, पशुधन और जनस्वास्थ्य चारों को बर्बाद किया।

2. आंकड़े क्यों छुपाए जा रहे हैं ? समाजसेवियों का आरोप - ग्रामीण क्षेत्रों में कैंसर, सांस रोगों के वास्तविक सर्वे आंकड़े सार्वजनिक नहीं किए जाते। यदि कर दिए जाएं तो भयावह स्थिति उजागर होगी।

3. समाधान क्या है ?

- कीटनाशक बिक्री पर सख्त लाइसेंस और किसानों को PPE किट व प्रशिक्षण अनिवार्य।

- जैविक/प्राकृतिक खेती को सब्सिडी, बरनाला मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर लागू करना।

- दूध और अनाज की नियमित कीटनाशक अवशेष जांच और रिपोर्ट को पब्लिक करना।

›संपादकीय अपील - जनहित में जारीः किसान गजेंद्र की मौत हमें चेतावनी है। जब तक हम ₹ज्यादा पैदावार₹ की अंधी दौड़ बंद कर 'सुरक्षित पैदावार' की ओर नहीं जाएंगे, तब तक खेत से थाली तक यह जहरीला चक्र नहीं रुकेगा। प्रशासन से मांग है - ग्रामीण स्वास्थ्य सर्वे की रिपोर्ट सार्वजनिक करो, पारदर्शिता ही इलाज की पहली दवा है।

संपादकः संजय कुमार बाठला। प्रधान संपादक, परिवहन विशेष

पिथौरागढ़ में 400+ HIV मामलों की चर्चा से बढ़ी चिंता - डर नहीं, जागरूकता है बचाव

संक्रमित सिरिंज और असुरक्षित टैटू उपकरण बन सकते हैं बड़ा जोखिम, लेकिन HIV छूने से नहीं फैलता – समय पर जांच और ART इलाज से स्वस्थ जीवन संभव

रिपोर्ट सत्यम मिश्रा, परिवहन विशेष समाचार पत्र, उत्तर प्रदेश/उत्तराखंड

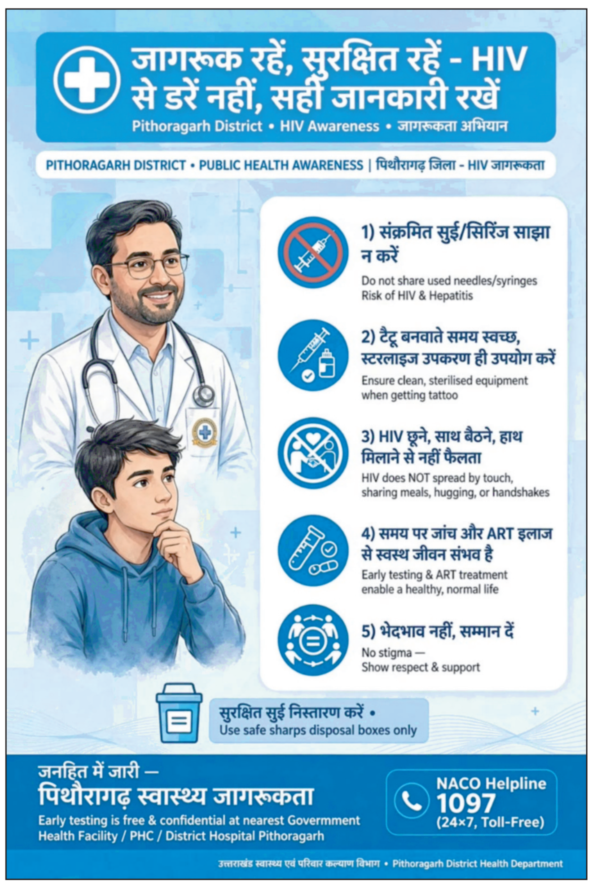

पिथौरागढ़। उत्तराखंड के सीमांत जिले पिथौरागढ़ में HIV के 400 से अधिक मामले सामने आने की रिपोर्ट ने स्वास्थ्य जागरूकता पर नई बहस छेड़ दी है। हालांकि यह आंकड़ा कुल दर्ज मामले हैं, उपचाराधीन मामले हैं या किसी विशेष अवधि के नए मामले - इसका आधिकारिक विस्तृत विवरण स्वास्थ्य विभाग से ही स्पष्ट होगा। इस चर्चा को सनसनी की बजाय जागरूकता के अवसर के रूप में देखना जरूरी है।

तथ्य क्या कहते हैं:

1. संक्रमित सिरिंज क्यों है बड़ा खतरा ? WHO के अनुसार HIV संक्रमित रक्त के संपर्क से फैल सकता है। किसी संक्रमित व्यक्ति द्वारा इस्तेमाल की गई सुई-सिरिंज को दूसरा व्यक्ति इस्तेमाल करे तो संक्रमण का जोखिम बनता है। यही नहीं, इसके जरिए हेपेटाइटिस B और C जैसे अन्य रक्तजनित संक्रमण भी हो सकते हैं।

2. टैटू फैशन है, पर सुरक्षा जरूरीः टैटू बनवाना अपने आप में HIV का कारण नहीं है। खतरा तब है जब त्वचा छेदने वाले उपकरण दूषित या अस्वच्छ हों। WHO ने स्पष्ट किया है कि दूषित टैटू उपकरण संक्रमण का जोखिम पैदा कर सकते हैं।

3. हर मामला नशे से नहीं जुड़ाः यह धारणा गलत है कि हर HIV पॉजिटिव व्यक्ति नशा करता है। WHO के अनुसार HIV के प्रमुख मार्ग असुरक्षित यौन संबंध, संक्रमित रक्त, संक्रमित सुई-सिरिंज साझा करना और मां से बच्चे में संक्रमण हैं। केवल HIV पॉजिटिव होने के आधार पर किसी के चरित्र पर टिप्पणी करना गलत और नुकसानदायक है।

4. HIV कैसे नहीं फैलताः हाथ मिलाने, गले मिलने, साथ बैठने, खाना खाने या सामान्य सामाजिक संपर्क से HIV नहीं फैलता।

5. जांच और इलाज ही सुरक्षाः HIV की पहचान केवल लक्षणों से नहीं, बल्कि निर्धारित चिकित्सा जांच से ही होती है। आज एंटीरेट्रोवायरल थेरेपी (ART) उपलब्ध है जिससे वायरस को नियंत्रित किया जा सकता है। WHO के अनुसार प्रभावी ART से वायरल लोड इतना कम हो जाता है कि यौन मार्ग से संचरण का जोखिम शून्य हो जाता है।

निष्कर्षः युवाओं को नशे से दूर रहने, किसी भी मेडिकल या कॉस्मेटिक प्रक्रिया में स्वच्छता को प्राथमिकता देने और समय पर जांच कराने की जरूरत है। HIV किसी व्यक्ति के चरित्र का प्रमाण नहीं है। भेदभाव के बजाय उपचार, सहारा और सम्मान देना ही सही रास्ता है।

पित्त / एसिडिटी से परेशान हैं?

पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता, नेत्री भाजपा दिल्ली प्रदेश, सह संयोजक बंगाली प्रकोष्ठ भाजपा दिल्ली, सदस्या उज्ज्वला योजना दिल्ली

प्रस्तुतकर्ता विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार

क्या आपको बार-बार सीने में जलन, खट्टी डकार, पेट में जलन या भारीपन महसूस होता है ?

इसके पीछे गलत खान-पान, अधिक मसालेदार भोजन, चाय-कॉफी का अधिक सेवन, तनाव और अनियमित जीवनशैली जैसे कई कारण हो सकते हैं।

पित्त/एसिडिटी बढ़ने के सामान्य कारण

▪ बहुत ज्यादा तला-भुना और मसालेदार भोजन

▪ चाय-कॉफी का अत्यधिक सेवन

▪ धूम्रपान एवं शराब जैसी आदतें

▪ अधिक गर्मी और पानी की कमी

▪ तनाव, चिंता और अधिक सोच-विचार

▪ अनियमित भोजन और देर रात खाना

पाचन को आराम देने के लिए कुछ सरल उपाय

* आंवला — पोषक तत्वों और विटामिन C का अच्छा स्रोत है।

* मूंग-दाल और चावल — हल्का एवं आसानी से पचने वाला भोजन हो सकता है।

* अदरक — पाचन में उपयोगी माना जाता है, लेकिन जिन लोगों में इससे जलन बढ़ती है वे सावधानी रखें।

* कोकम — सामान्य मात्रा में आहार का हिस्सा बनाया जा सकता है।

* पका हुआ केला — पौष्टिक फल है और कुछ लोगों को पेट के लिए हल्का लग सकता है।

* पर्याप्त पानी — शरीर में पानी की कमी न होने दें और भोजन के बाद तुरंत लेटने से बचें।

जरूरी सावधानीः अगर सीने में जलन बार-बार होती है, निगलने में परेशानी, लगातार उल्टी, खून की उल्टी, काला मल या तेज सीने में दर्द हो, तो डॉक्टर से सलाह लेना जरूरी है।

सही आहार + नियमित दिनचर्या + तनाव पर नियंत्रण = बेहतर पाचन

स्वच्छता और सुरक्षा के असली प्रहरी: 350 योद्धाओं का महा-सम्मान

जब पूरा शहर सो रहा होता है तब ये सुरक्षित एवं स्वच्छ करते हैं दिल्ली को - MCD से फायर फाइटर तक 6 विभागों के वीरों को नमन

हमारी सुबह सुंदर, हमारा जीवन सुरक्षित – इन्हीं के कारण

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र

भारत रत्न से बड़ा है इनका श्रम रत्न नेता, अभिनेता, खिलाड़ी तो सम्मानित होते ही हैं। पर समाज की नींव जिनके हाथों में है, उन सफाई योद्धाओं को हम कितना याद करते हैं ?

इस बार 350 ऐसे योद्धाओं का सम्मान होने जा रहा है जो वर्दी नहीं पहनते, पर फ्रंटलाइन पर लड़ते हैं। यह केवल खबर नहीं, एक सामाजिक ऋण चुकाने की कोशिश है।

6 विभाग, 350 योद्धा - किसने क्या किया ?

१. एम.सी.डी. (MCD) सफाई योद्धा - सड़कों के रक्षक

- मुख्य कार्यः सुबह 4 बजे से पहले सड़कों-गलियों से कचरा हटाना, चाहे कड़कती ठंड हो या 47 डिग्री की धूप।

- तथ्यः महामारी में योगदान - जब कोरोना, डेंगू, प्लेग में हम घरों में बंद थे, तब इन्होंने पूरे शहर को सैनिटाइज किया। इनके बिना दिल्ली 24 घंटे में कचरा घर बन जाएगी।

२. दिल्ली जल बोर्ड (DJB) सीवर सफाई योद्धा - सबसे जोखिम भरा काम

- मुख्य कार्यः शहर की सीवर लाइनें चालू रखना। अगर ये जाम हों तो पूरी दिल्ली ठहर जाएगी।

- तथ्यः अपनी जान जोखिम में डालकर गंदगी में उतरकर काम करना। हमारे घरों में स्वच्छ पानी की निकासी इन्हीं के कारण संभव है। ये सबसे अधिक उपेक्षित, पर सबसे जरूरी हैं।

. एन.डी.एम.सी. (NDMC) सफाई योद्धा - देश की छवि के निर्माता

- मुख्य कार्यः राष्ट्रपति भवन, संसद, दूतावास, कनॉट प्लेस जैसे VIP क्षेत्रों को चमकाना।

- तथ्यः G-20 समिट हो या विदेशी मेहमान, दुनिया के सामने भारत की पहली तस्वीर इनके झाड़ू से बनती है। देश की नंबर वन छवि इनके श्रम पर टिकी है।

४. स्कूल और अस्पताल सफाई योद्धा - भविष्य और जीवन के रक्षक

- मुख्य कार्यः बच्चों के भविष्य और मरीजों के जीवन की रक्षा।

- तथ्यः यदि स्कूल की क्लास साफ न हो तो बच्चे पढ़ नहीं सकते, यदि अस्पताल का वार्ड साफ न हो तो ऑपरेशन नहीं हो सकता। संक्रमण को रोकने की पहली दवा - सफाई है।

५. सरकारी व गैर-सरकारी बैंक और दफ्तर सफाई योद्धा - अर्थव्यवस्था के पहिए

- मुख्य कार्यः देश की अर्थव्यवस्था को रोज सुबह स्टार्ट करना।

- तथ्यः जहाँ करोड़ों का लेन-देन होता है, वह बैंक-दफ्तर तब तक नहीं खुलता जब तक ये टेबल, कंप्यूटर, फर्श को काम करने लायक न बना दें।

६. फायर फाइटर सुरक्षा योद्धा - आग में भी अडिग

- मुख्य कार्यः आग और आपदा में जान-माल की रक्षा।

- तथ्यः जब सब भाग रहे होते हैं, तब ये आग में कूदते हैं। दूसरों के बच्चों, माता-पिता को बचाने के लिए अपनी जान दांव पर लगाना - यही इनकी ड्यूटी है।

परिवहन विशेष का विश्लेषण - क्यों है यह खबर जरूरी ?

जनहित का पहलूः स्वच्छता सिर्फ सरकार का काम नहीं, आदत है। इन 350 योद्धाओं के सम्मान से हम समाज को संदेश दे रहे हैं - कचरा सड़क पर फेंकने से पहले सोचो, कोई उसे अपने हाथों से उठाएगा।

मुख्य बिंदुः

1. ये 6 विभाग मिलकर दिल्ली को 24x7 चलाते हैं।

2. इनका काम नंबर वन, पर सम्मान अक्सर आखिरी पंक्ति में।

3. इस महा-सम्मान समारोह का उद्देश्य - इनके परिवारों को मंच पर लाकर बताना कि देश आपका ऋणी है।

›संपादकीय अपीलः अगली बार जब MCD वाला सुबह दिखे, उसे रोककर 'धन्यवाद' जरूर बोलें। यही सबसे बड़ा अवार्ड है।

संपादकः संजय कुमार बाठला। मुख्य संपादक, परिवहन विशेष

यह लेख सनातन धर्म के मूल सिद्धांत - अहिंसा, कर्मफल और जीवदया पर आधारित आत्मचिंतन है,

जब भगवान विष्णु को भी अदला का बदला चुकाना पड़ता है तो तेरी-मेरी क्या बुनियाद ?

क्या मैं हिन्दू हूँ ? – एक आत्मचिंतन – शाकाहार, जीवदया और कर्मफल पर सनातन संदेश

लेख प्रकारः आत्मचिंतन, नैतिक आलेख

संपादकः संजय कुमार बाठला - परिवहन विशेष

यह लेख किसी पर आरोप नहीं, स्वयं से प्रश्न है। सनातन में कहा गया है - कर्म का ऋण ब्रह्म भी चुकाता है। तो हम मनुष्य कैसे बच सकते हैं ?

मुख्य तथ्य और पौराणिक प्रसंग

1. त्रेता से द्वापर तक - कर्म का चक्रः पौराणिक कथा के अनुसार त्रेता युग में श्री राम ने सुग्रीव के भाई बाली का वध किया। द्वापर में उसी कर्मफल स्वरूप भगवान श्री कृष्ण के रूप में विष्णु अवतार को जरा नामक शिकारी के विषाक्त तीर से देह त्यागना पड़ा। शिकारी ने कृष्ण के तलवे में चमकते पद्म को हिरण की आँख समझा। जब शिकारी ने क्षमा मांगी तो श्री कृष्ण ने कहा - तेरा-मेरा हिसाब चुकता हुआ। यही सनातन का कर्म सिद्धांत है - अदला का बदला, कोई नहीं बचता।

2. मर्यादा पुरुषोत्तम का आचरण - वन में भी अहिंसाः श्री रामचंद्र जी 14 वर्ष जंगल में पशु-पक्षियों के साथ रहे। माता सीता रावण की कैद में रहीं। उन्होंने कंद-मूल, बासी फल-फूल खाकर गुजारा किया, पर कभी किसी जीव को मारकर नहीं खाया। यही मर्यादा है।

3. श्री कृष्ण का जीवन-संदेश - गोपाल से जगतगुरु तकः बचपन से ही पशु-पक्षियों के साथ रहे, गौ-सेवक, गौ-रक्षक कहलाए। उन्होंने भी कभी मांसाहार नहीं किया। जिसने शबरी के जूठे बेर प्रेम से खाए, सुदामा को सच्चा मित्र बनाया - हम उसी के नाम पर कुकर्म करें तो कैसे सनातनी कहलाएं ?

मुख्य बिंदु - आज के समाज पर प्रश्न

1. दोहरा चरित्रः हम माता-पिता की मृत्यु पर उन्हें जंगल में ले जाकर अग्नि देते हैं, बिना नहाए कुछ नहीं खाते - इतनी शुद्धता। फिर किसी बेजुबान जीवित प्राणी को मारकर घर लाकर उसका मांस बनाकर खाते हैं और मित्रों में उसकी महिमा बताते हैं। यह कैसी नियत ?

2. भक्त से राक्षस तक का सफरः त्रेता-द्वापर में भक्तों को मांसाहारी राक्षस सताते थे, तब विष्णु स्वयं या अपने दूत भेजकर राक्षस का वध करते थे। आज विष्णु का भक्त स्वयं मांसाहार कर राक्षस प्रवृत्ति अपना रहा है।

3. कबीर वाणी - अंतिम चेतावनीः

"बकरी पात को खात है, ताको काढ़ि खाल।

जो बकरी को खात है, उसका क्या होगा हाल ?"

अर्थ - बकरी तो घास-पात खाकर गुजारा करती है, फिर भी मरने के बाद उसकी खाल खींची जाती है। जो उस बकरी को ही खा रहा है, उसकी क्या दुर्गति होगी ?

और - ₹जो नर गोस्त को खात है, प्रत्यक्ष राक्षस जान।"

4. छोटी सी चोट पर तड़प, पूरी गर्दन कटने का दर्द क्या समझे ?

अपनी उंगली थोड़ी सी कट जाने पर हम दर्द से बेहाल हो जाते हैं, तो जिस जीव की जीते जी पूरी गर्दन काटी जाती है, उसे कितना दर्द होता होगा - यह इंसानियत का प्रश्न है।

> संपादकीय निष्कर्षः > यह माता की भक्ति नहीं, यह जीव की स्वादपूर्ति के लिए पाखंड है। सनातन का अर्थ - सत्य, अहिंसा, करुणा, जीव-मात्र पर दया। शबरी के बेर, सुदामा की मित्रता, गौ-सेवा - यही हमारे आराध्य का चरित्र है। यदि हम स्वयं को हिन्दू कहते हैं, तो आहार में शुद्धता, विचार में करुणा और कर्म में जीवदया ही हमारी पहचान होनी चाहिए।

> क्या मैं हिन्दू हूँ ? - इस प्रश्न का उत्तर हमारे भोजन की थाली में ही छिपा है।

विशेष नोटः यह लेख जनहित, आत्मचिंतन और अहिंसा के प्रचार हेतु प्रकाशित है। इसका उद्देश्य किसी की भोजन-आदत पर आघात नहीं, बल्कि सनातन मूल्यों पर चिंतन कराना है।

सांसारिक रिश्ते का सच

लेख - हरिओम बाजपेई 'नादान'

प्रस्तुतकर्ता विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र

एक वृद्धा माँ अपने बीमार पुत्र के अचानक बिगड़ते स्वास्थ्य से अत्यंत चिंतित थी। मध्यरात्रि का समय बीत चुका था और घर में रखी संचित पूँजी समाप्त हो चुकी थी। संकट की इस विकट घड़ी में उसे सबसे पहले अपने सगे रक्त-संबंधियों और अन्य सांसारिक नातों की याद आई। उसे पूर्ण विश्वास था कि विपत्ति के इन क्षणों में अपने ही काम आएँगे।प्रातःकाल होते ही वह दुखी माँ सहायता की आशा लिए अपने एक संपन्न सांसारिक रिश्तेदार के द्वार पर पहुँची। उसने डसंकोच के साथ अपनी विवशता बताई और बीमार पुत्र के उपचार के लिए सहयोग माँगा। किंतु उस रिश्तेदार ने उसे भीतर बैठाना तो दूर, चौखट पर ही खड़े-खड़े नज़रें चुराते हुए कहा, ₹तुम तो जानती ही हो कि कुल की मर्यादा क्या है। अगर किसी को पता चला कि हमारे परिवार में ऐसी तंगी आ गई है, तो समाज क्या कहेगा लोग तरह-तरह की बातें बनाएँगे। हमारी सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रश्न है, इसलिए मैं इस समय कोई सहायता नहीं कर सकता।₹

सांसारिक रिश्तों की यह शीतल निष्ठुरता देखकर उस माँ का हृदय सन्न रह गया। जिन संबंधों पर उसे सर्वाधिक अभिमान था, वे 'समाज क्या कहेगा' के झूठे आवरण और स्वार्थ के पीछे छिपकर अपने कर्तव्य से मुख मोड़ चुके थे।हताश और व्यथित मन से वह वृद्धा मार्ग के किनारे एक पुराने वृक्ष की छाया में बैठकर रोने लगी। उसकी आँखों से विवशता के अश्रु बह रहे थे। तभी वहाँ से नादान गुज़रे। उस शोकाकुल माँ को इस अवस्था में देखकर नादान तुरंत रुके और अत्यंत आत्मीयता से बोले माँ जी, आप यहाँ इस तरह व्याकुल क्यों बैठी हैं ? सब कुशल तो है उस विवश माँ ने रुँधे हुए गले से अपनी सारी व्यथा कह सुनाई। नादान के पास उस समय धन भले ही न रहा हो, किंतु उन्होंने अपनी तमाम व्यस्तताओं और कार्यों को छोड़कर उस अकेली माँ को अपना सबसे अमूल्य उप हार मे अपना समय' दिया नादान ने उस क्षण माँ का हाथ थामा और उनके साथ निरंतर खड़े रहने का संकल्प लिया।नादान बिना किसी स्वार्थ के अपना अमूल्य समय देकर उस विवश माँ के साथ भागे-दोड़े और उन्हें तुरंत चिकित्सालय पहुँचाया। वे पल-पल उस माँ का संबल बने रहे। किंतु नियति को कुछ और ही स्वीकार था। मृत्यु-शैया पर पड़ा वह पुत्र अपने जीवन की अंतिम साँसें गिन रहा था। नादान और अपनी माँ को समीप देखकर उसके अश्रुपूरित नेत्रों में एक असीम शांति तैर गई। जीवन के उन अंतिम क्षणों में वह अत्यंत करुणा से बोला, ₹मैं आज भी अपने द्वार पर उन्हें निमंत्रित करने की इच्छा रखता हूँ जो जीवन भर कभी नहीं आए मेरा आपसे तो सांसारिक रिश्ता है, और यह संसार न जाने मेरे विषय में क्या-क्या कहता है किंतु मेरी अंतरात्मा साक्षी है। अब इस दुखी मन से मेरे प्रस्थान का समय आ गया है। लोग मनुष्य के चले जाने के बाद ही उसे सच्चा स्मरण देते हैं—यही इस जीवन का अटल सत्य है।₹इतना कहते ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गए। वहाँ उपस्थित सभी स्तब्ध रह गए। जिस सांसारिक रिश्ते ने सामाजिक प्रतिष्ठा का ढोंग रचकर संकट के समय में मुँह मोड़ लिया था, वहीं नादान ने अपना अत्यंत अमूल्य समय दान करके उस अंतिम घड़ी में उस माँ को कभी अकेला नहीं होने दिया।

उस दिन यह सत्य पूर्णतः सिद्ध हो गया कि 'समाज क्या कहेगा', यह तो केवल अपने स्वार्थ को छिपाने का एक ढोंग है। जब सांसारिक और खून के रिश्ते ही विपत्ति में काम नहीं आते, तब समाज की दुहाई देना व्यर्थ है।सांसारिक जीवन में केवल धन का दान ही सब कुछ नहीं होता; किसी रोते हुए के आँसू पोंछने के लिए अपने 'समय का दान' देना सबसे बड़ा परोपकार है। हम केवल अपनी दृष्टि के भ्रम के कारण संसार में सही पहचान नहीं बना पाते कि कौन अपना है और कौन पराया। अपनापन केवल सांसारिक नातों में नहीं, अपितु संकट के समय दिए गए निस्वार्थ समय और आत्मीयता में बसता है।

अंक ज्योतिष भविष्यवाणी • 27 सितम्बर 2026

दिन का अंकः 1 | नई शुरुआत, नेतृत्व, स्वतंत्रता, आत्मविश्वास और पहल का दिन।

मूलांक 1 | आज आपका स्वाभाविक अंक विशेष रूप से सक्रिय है

आज पहल, आत्मविश्वास और स्वतंत्र कार्य को विशेष समर्थन मिलता है। कोई नई व्यावसायिक या निजी दिशा तब गति पकड़ सकती है जब आप स्पष्टता के साथ पहला कदम उठाएं। निर्णायक नेतृत्व करें, लेकिन अधीरता और दूसरों से अपनी गति की अपेक्षा करने से बचें।

मूलांक 2 | संवेदनशीलता बनाए रखते हुए अपनी बात स्पष्ट कहें

आज अपनी जरूरतों को अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त करना जरूरी हो सकता है। सहयोग महत्वपूर्ण है, लेकिन आवश्यक निर्णय के लिए किसी दूसरे की स्वीकृति का इंतजार न करें। शांत संवाद आपके आत्मविश्वास और रिश्तों दोनों को मजबूत कर सकता है।

मूलांक 3 | नए विचार को स्पष्ट शुरुआत दें

आज रचनात्मकता और संवाद को नई ऊर्जा मिलेगी। प्रस्तुति, बातचीत, लेखन या नई योजना तब सकारात्मक शुरुआत ले सकती है जब आपकी बात केंद्रित हो। उत्साह को बहुत सारी संभावनाओं में बिखेरने के बजाय एक अच्छे विचार को आगे बढ़ाएं।

मूलांक 4 | व्यावहारिक आधार के साथ शुरुआत करें

नई व्यवस्था, दिनचर्या या कार्य योजना आज सफलतापूर्वक शुरू की जा सकती है। आपका व्यवस्थित स्वभाव इरादे को उपयोगी रूप देने में मदद करेगा। हर चीज तुरंत पूर्ण बनाने के बजाय स्पष्ट प्राथमिकताओं और यथार्थवादी चरणों से शुरुआत करें।

मूलांक 5 | नई गतिशीलता अवसर ला सकती है

फोन, बैठक, यात्रा या अचानक मिला संपर्क नई संभावना खोल सकता है। आपकी अनुकूलन क्षमता तेजी से प्रतिक्रिया देने में मदद करेगी, लेकिन प्रतिबद्धता से पहले विवरण जांचें। जल्दबाजी की शुरुआत से बेहतर है समझदारी से उठाया गया पहला कदम।

मूलांक 6 | अपने लक्ष्यों के लिए भी स्थान बनाएं

आप स्वाभाविक रूप से परिवार और रिश्तों को महत्व देते हैं, लेकिन आज अपनी प्राथमिकताओं को टालना उचित नहीं होगा। घर, रचनात्मकता या रिश्ते से जुड़ी नई योजना उत्साह ला सकती है। दूसरों का सहयोग करें और अपने लिए भी पर्याप्त ऊर्जा बचाएं।

मूलांक 7 | आंतरिक स्पष्टता को कार्य में बदलें

कुछ समय से चल रहा चिंतन अब अगला स्पष्ट कदम दिखा सकता है। मिली हुई अंतर्दृष्टि पर भरोसा रखें, लेकिन केवल सोचते रहने के बजाय उसे एक व्यावहारिक कार्य में बदलें। शांत शुरुआत समय के साथ महत्वपूर्ण बन सकती है।

मूलांक 8 | अनुशासित आत्मविश्वास के साथ जिम्मेदारी लें

करियर, धन और दीर्घकालिक लक्ष्यों में आज निर्णायक नेतृत्व लाभ दे सकता है। नई रणनीति या जिम्मेदारी सावधानी से संभाली जाए तो आपकी स्थिति मजबूत हो सकती है। अधिकार का रचनात्मक उपयोग करें और अनावश्यक टकराव से बचें।

मूलांक 9 | समापन के बाद नया अध्याय शुरू करें

हाल का कोई समापन या भावनात्मक मुक्ति नई शुरुआत के लिए स्थान बना सकती है। पुराने विवाद में लौटने के बजाय साहस के साथ आगे बढ़ें। उद्देश्यपूर्ण पहला कदम आपकी ऊर्जा को प्रगति और नए उत्साह की दिशा में मोड़ सकता है।

कॉल / व्हाट्सऐप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes

Vediccodes - Your vibrations... our solutions

सेवा संकल्प अभियान-सेवा की कहानी : अटल लाइब्रेरी बनी ग्रामीण युवाओं के सपनों की नई उड़ान

गांव दूजाना में घर के पास मिला प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी का बेहतर माहौल, विद्यार्थियों का बच रहा समय और धन

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर,26 सितंबर। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिभाओं की कमी नहीं है, जरूरत है तो उन्हें सही संसाधन और अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराने की। इसी सोच को साकार करते हुए हरियाणा सरकार के विकास एवं पंचायत विभाग की अटल लाइब्रेरी योजना गांव दुजाना के विद्यार्थियों और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले युवाओं के लिए नई उम्मीद बनकर उभरी है। गांव में स्थापित आधुनिक अटल लाइब्रेरी ने युवाओं को अपने ही गांव में अध्ययन की बेहतर सुविधा उपलब्ध कराई है।

गांव दुजाना की आबादी लगभग 7715 है और साक्षरता दर 76.21 प्रतिशत है। पहले गांव के विद्यार्थियों एवं युवाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए करीब 14 किलोमीटर दूर झज्जर या अन्य बड़े शहरों का रुख करना पड़ता था। इससे आने-जाने में समय और धन खर्च होता था। विशेष रूप से छात्राओं के लिए दूर जाकर पढ़ाई करना सुरक्षा और सामाजिक परिस्थितियों के कारण हमेशा आसान नहीं था।

अब गांव में ही अटल लाइब्रेरी की सुविधा उपलब्ध होने से विद्यार्थियों को पढ़ाई के लिए दूर जाने की आवश्यकता कम हुई है। वे अपने घर के नजदीक सुरक्षित और अनुकूल वातावरण में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं।

उपलब्ध संसाधनों का किया गया बेहतर उपयोग

जिला परिषद के सीईओ मनीष फोगाट ने बताया कि विकास एवं पंचायत विभाग द्वारा वर्ष 2025 में गांव दुजाना के राजकीय विद्यालय में अटल लाइब्रेरी की स्थापना की गई। इस पहल की खास बात यह है कि नए भवन के निर्माण के बजाय उपलब्ध स्थान और संसाधनों का उपयोग करते हुए उसे आधुनिक अध्ययन केंद्र के रूप में विकसित किया गया।

लाइब्रेरी में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए आवश्यक पुस्तकें एवं अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई गई है। विद्यार्थियों के लिए पर्याप्त फर्नीचर और बैठने की व्यवस्था के साथ वातानुकूलित अध्ययन कक्ष की सुविधा भी उपलब्ध है।

एक ही स्थान पर पढ़ाई और प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी

अटल लाइब्रेरी विद्यार्थियों के लिए केवल किताबें रखने का स्थान नहीं, बल्कि अध्ययन का बेहतर वातावरण उपलब्ध कराने वाला केंद्र बन रही है। यहां विद्यार्थी नियमित रूप से बैठकर अपनी पढ़ाई कर रहे हैं और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए आवश्यक अध्ययन सामग्री का उपयोग कर रहे हैं। इस सुविधा से विद्यार्थियों को महंगी कोचिंग या अध्ययन संसाधनों के लिए शहरों पर निर्भरता कम करने में भी मदद मिल रही है।

छात्राओं को मिला सुरक्षित और सुविधाजनक अध्ययन वातावरण

अटल लाइब्रेरी का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव गांव की छात्राओं के लिए दिखाई देता है। पहले दूर शहरों में जाकर पढ़ाई करना कई छात्राओं के लिए व्यावहारिक नहीं था। अब गांव में ही अध्ययन की सुविधा उपलब्ध होने से वे सुरक्षित वातावरण में अपनी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर सकती हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्र की बेटियों को शिक्षा और रोजगार के अवसरों की दिशा में आगे बढ़ने का बेहतर मंच मिला है।

सामुदायिक भागीदारी से मजबूत हुआ संचालन

लाइब्रेरी के बेहतर संचालन के लिए अटल लाइब्रेरी प्रबंधन समिति का गठन किया गया है। इसमें ग्राम पंचायत, ग्राम सचिव, स्थानीय शिक्षाविदों और युवाओं से जुड़े प्रतिनिधियों की भागीदारी सुनिश्चित की गई है। समिति द्वारा लाइब्रेरी के रखरखाव, अनुशासन और विद्यार्थियों के लिए आवश्यक मार्गदर्शन जैसी गतिविधियों पर नजर रखी जाती है।

सरकारी नौकरी के सपनों को मिल रहा आधार

प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में अटल लाइब्रेरी से पढ़ाई कर अनेक युवाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिली है। फतेहाबाद जिले के गोरखपुर गांव की लाइब्रेरी से अब तक करीब 40 युवाओं के सरकारी नौकरी हासिल करने का उदाहरण सामने आया है। ऐसी सफलताएं दूजाना के युवाओं के लिए भी प्रेरणा का काम कर रही हैं।

अटल लाइब्रेरी युवाओं को यह विश्वास दे रही है कि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए केवल बड़े शहरों में जाना जरूरी नहीं है। यदि गांव में गुणवत्तापूर्ण अध्ययन संसाधन और बेहतर वातावरण उपलब्ध हो, तो ग्रामीण युवा भी अपने लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं।

परिवारों पर कम हुआ आर्थिक बोझ

गांव में ही अध्ययन सुविधा उपलब्ध होने से विद्यार्थियों और उनके परिवारों के आने-जाने तथा बाहरी अध्ययन संसाधनों पर होने वाले खर्च में कमी आई है। वहीं, युवाओं के सरकारी एवं अन्य रोजगार के अवसरों की ओर बढ़ने से भविष्य में ग्रामीण परिवारों की आर्थिक स्थिति मजबूत होने की संभावनाएं भी बढ़ रही हैं।

ग्रामीण प्रतिभा को गांव में ही मिल रहा मंच

हरियाणा सरकार की अटल लाइब्रेरी पहल ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के संसाधनों को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास है। प्रदेश में 22 जिलों में 996 अटल लाइब्रेरी स्थापित किए जाने के साथ ही राज्य सरकार ने सभी 6,225 ग्राम पंचायतों में अटल ई-लाइब्रेरी स्थापित करने की योजना बनाई है। गांव दूजाना की अटल लाइब्रेरी इसी सोच का जीवंत उदाहरण है कि जब गांव के युवाओं को पढ़ने के लिए बेहतर संसाधन और अनुकूल वातावरण अपने ही गांव में मिलता है, तो प्रतिभा को आगे बढ़ने के लिए शहरों की ओर देखने की जरूरत नहीं रहती।

दूजाना की अटल लाइब्रेरी — पढ़ाई से रोजगार तक का सफर

अटल लाइब्रेरी गांव के विद्यार्थियों को किताबों और अध्ययन कक्ष की सुविधा देने के साथ-साथ उनके सपनों को दिशा देने का माध्यम बन रही है। यह पहल ग्रामीण युवाओं, विशेषकर छात्राओं को शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं और रोजगार के नए अवसरों से जोड़ते हुए सशक्त और आत्मनिर्भर ग्रामीण समाज की दिशा में एक सकारात्मक कदम साबित हो रही है।

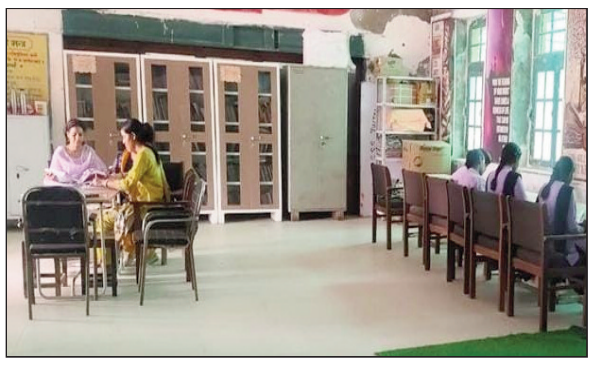

सेवा संकल्प अभियान के तहत गांव दुजाना में सोमवार को लगेगा सेवा सेतु कैंप

सेवा सेतु कैंप के माध्यम से सरकार की योजनाओं का लाभ मिल रहा है एक छत के नीचे

जिला परिषद के सीईओ मनीष फोगाट ने दी जानकारी

झज्जर, 26 सितंबर। जिलाभर में सेवा संकल्प अभियान के तहत आमजन को सरकार की योजनाओं का लाभ उनके नजदीक पहुंचाने के उद्देश्य से जिला के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में सेवा सेतु कैंप लगाए जा रहे हैं। डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में लग रहे सेवा सेतु कैम्प में लोग सरकार की योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं। मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद मनीष फोगाट ने जानकारी देते हुए बताया कि आगामी 15 अक्टूबर तक निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार जिले के विभिन्न स्थानों पर सेवा सेतु कैंप लगाए जा रहे हैं। सीईओ ने बताया कि सोमवार, 28 सितंबर को गांव दुजाना , 29 सितंबर को गांव सिलाना तथा 30 सितंबर को बहादुरगढ़ ब्लॉक मुख्यालय में सेवा सेतु कैंप लगाया जाएगा। उन्होंने बताया कि दुजाना में लगने वाले कैम्प का शुभारंभ भाजपा नेता संजय कबलाना करेंगे।

यह रहेगा सेवा सेतु कैम्प का शेड्यूल : सीईओ ने बताया कि 1 अक्टूबर को गांव रोहद, 3 अक्टूबर को गांव डीघल, 5 अक्टूबर को गांव दुबलधन, 6 अक्टूबर को बादली ब्लॉक मुख्यालय व मातनहेल ब्लॉक मुख्यालय, 7 अक्टूबर को गांव बुपनिया तथा 8 अक्टूबर को गांव गुभाना में सेवा सेतु कैंप आयोजित होंगे। उन्होंने बताया कि 9 अक्टूबर को गांव खानपुर खुर्द व गांव पाटोदा, 10 अक्टूबर को गांव बिरोहड़, 12 अक्टूबर को माछरौली ब्लॉक मुख्यालय व गांव ढाकला, 13 अक्टूबर को गांव खुड्डन, 14 अक्टूबर को साल्हावास ब्लॉक मुख्यालय तथा 15 अक्टूबर को गांव भुरावास में सेवा सेतु कैंप आयोजित किए जाएंगे।

सेवा संकल्प अभियान के तहत सेवा सेतु कैंप का हुआ झज्जर में आयोजन

भाजपा जिलाध्यक्ष विकास वाल्मिकी ने कैम्प का किया अवलोकन

झज्जर ब्लॉक के लाभार्थियों ने सरकारी सेवाओं, जनकल्याणकारी योजनाओं व स्वास्थ्य जांच का उठाया लाभ

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 26 सितंबर। डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में 'सेवा संकल्प अभियान' के तहत आमजन को सरकारी सेवाओं एवं जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सहज रूप से उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से झज्जर ब्लाक मुख्यालय पर सेवा सेतु कैंप का आयोजन किया गया। भाजपा जिलाध्यक्ष विकास वाल्मिकी ने कैम्प का शुभारंभ किया। कैंप में बड़ी संख्या में जिला वासियों ने पहुंचकर विभिन्न विभागों की योजनाओं एवं सेवाओं की जानकारी प्राप्त की और उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाया। सीईओ जिला परिषद मनीष फौगाट ने भी सेवा सेतु कैम्प का अवलोकन करते हुए आमजन को प्रदत्त सेवाओं की जानकारी ली।

सेवा सेतु कैम्प के माध्यम से लोगों को सरकारी सेवा का मिल रहा लाभ : विकास

भाजपा जिलाध्यक्ष विकास वाल्मीकि ने कहा कि सरकार की ओर से सेवा संकल्प अभियान में सेवा सेतु कैम्प लगाकर समाज के अंतिम व्यक्ति तक को योजनाओं का लाभ प्रदान किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सेवा सेतु कैम्प के माध्यम से आमजन को सरकार की योजनाओं से उल्लेखनीय प्रयास है।

श्री वाल्मीकि ने कहा कि कैंप में विभिन्न विभागों की ओर से स्टॉल लगाए गए, जहां विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने नागरिकों को सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं, सेवाओं और कार्यक्रमों की जानकारी दी जा रही है। आमजन को योजनाओं के लिए निर्धारित पात्रता, आवेदन प्रक्रिया तथा मिलने वाले लाभों के बारे में भी विस्तार से बताया जा रहा है। कैंप में पहुंचने वाले लोगों की समस्याओं एवं जिज्ञासाओं का मौके पर समाधान करने का प्रयास किया गया।

भाजपा जिलाध्यक्ष विकास वाल्मिकी ने जिलावासियों से आह्वान किया कि वे सेवा सेतु कैंप में पहुंचकर विभिन्न विभागों की योजनाओं एवं सेवाओं की जानकारी प्राप्त करें और अपनी पात्रता के अनुसार सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाएं।

नागरिकों की स्वास्थ्य जांच करने के साथ-साथ स्वास्थ्य संरक्षण, स्वस्थ जीवनशैली के लिए किया प्रेरित

सेवा सेतु कैंप में स्वास्थ्य एवं आयुष विभाग की ओर से स्वास्थ्य जांच शिविर भी लगाया गया। यहां नागरिकों की स्वास्थ्य जांच करने के साथ उन्हें स्वास्थ्य संरक्षण, स्वस्थ जीवनशैली तथा आयुष पद्धति से संबंधित आवश्यक जानकारी एवं परामर्श दिया गया। इससे कैंप में आने वाले नागरिकों को सरकारी योजनाओं की जानकारी के साथ स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं का भी लाभ मिला।

जिला परिषद सीईओ मनीष फौगाट ने बताया कि सेवा संकल्प अभियान के तहत आयोजित किए जा रहे सेवा सेतु कैंप का उद्देश्य सरकारी योजनाओं और सेवाओं को आमजन के करीब पहुंचाना है, ताकि पात्र नागरिकों को योजनाओं की जानकारी के लिए अलग-अलग कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़े और उन्हें एक ही स्थान पर आवश्यक जानकारी एवं मार्गदर्शन मिल सके। इस अवसर पर बीडीपीओ भारती सहित अन्य संबंधित विभागीय अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

एसआईआर 2026: मतदाता सूची की शुद्धता के लिए जागरूक हों नागरिक : डीसी

रविवार को भी जिला के सभी मतदान केंद्रों पर सुबह 9 से शाम 5 बजे तक मौजूद रहेंगे बीएलओ

30 सितंबर तक दर्ज कराए जा सकेंगे दावे एवं आपत्तियां

नाम जोड़ने के लिए फॉर्म-6, विवरण में संशोधन के लिए फॉर्म-8 और नाम हटाने के लिए फॉर्म-7 से करें आवेदन

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 26 सितंबर। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार विशेष गहन पुनरीक्षण-2026 के तहत मतदाता सूची को शुद्ध, पारदर्शी एवं अद्यतन बनाने के लिए जिला में विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में शनिवार को जिला के सभी मतदान केंद्रों पर विशेष अभियान आयोजित किया गया। यह जानकारी डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने दी।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि अपडेट मतदाता सूची तैयार करना लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। प्रत्येक पात्र नागरिक मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज करवाने के साथ-साथ अपने विवरण की भी जांच करे।

उन्होंने बताया कि रविवार 27 सितंबर को भी इस दौरान बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ) सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक अपने-अपने मतदान केंद्रों पर मौजूद रह कर नागरिकों व छात्र मतदाताओं से मतदाता सूची से संबंधित दावे एवं आपत्तियां प्राप्त करेंगे।

पात्र नागरिक अपने नाम और विवरण की करें जांच

डीसी वर्षा खांगवाल ने जिलावासियों से अपील की है कि वे प्रारंभिक मतदाता सूची में अपना तथा अपने परिवार के सभी पात्र सदस्यों का नाम अवश्य जांचें। उन्होंने कहा कि मतदाता सूची में नाम, पता, आयु, फोटो अथवा अन्य विवरण सही दर्ज होना आवश्यक है। नागरिक विशेष अभियान के दौरान अपने मतदान केंद्र पर पहुंचकर मतदाता सूची की जांच कर सकते हैं और आवश्यकता अनुसार दावा या आपत्ति दर्ज करा सकते हैं।

नाम छूटा है तो फॉर्म-6 के माध्यम से करें दावा

डीसी ने बताया कि यदि किसी पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में शामिल नहीं है, तो निर्धारित प्रक्रिया के तहत आवश्यक दस्तावेज एवं घोषणा-पत्र के साथ फॉर्म-6 भरकर नाम शामिल करवाने के लिए दावा प्रस्तुत किया जा सकता है। पात्र नागरिक इस सुविधा का लाभ उठाकर मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज करवाएं।

नाम, पता या अन्य विवरण में त्रुटि होने पर फॉर्म-8 भरें

जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि मतदाता सूची में नाम, पता, आयु, फोटो अथवा अन्य किसी विवरण में त्रुटि होने पर नागरिक निर्धारित दस्तावेज एवं घोषणा-पत्र के साथ फॉर्म-8 भरकर संशोधन के लिए आवेदन कर सकते हैं। डीसी ने कहा कि मतदाता अपने विवरण की जांच करें और किसी प्रकार की गलती पाए जाने पर समय रहते उसे दुरुस्त करवाएं।

अपात्र या मृत मतदाता का नाम हटाने के लिए फॉर्म-7

डीसी ने बताया कि किसी अपात्र, मृत, स्थानांतरित अथवा अन्य स्थान पर पहले से पंजीकृत मतदाता का नाम मतदाता सूची से हटवाने के लिए निर्धारित प्रक्रिया के तहत फॉर्म-7 के माध्यम से आपत्ति दर्ज कराई जा सकती है। नागरिक अपने दावे एवं आपत्तियां संबंधित बूथ लेवल अधिकारी अथवा निर्वाचक पंजीयन अधिकारी के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं।

रविवार 27 सितंबर को भी चलेगा विशेष अभियान

डीसी ने बताया कि मतदाताओं की सुविधा के लिए रविवार 27 सितंबर को भी जिले के सभी मतदान केंद्रों पर विशेष अभियान आयोजित किया जाएगा। रविवार को बीएलओ सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक मतदान केंद्रों पर उपस्थित रहेंगे और नागरिकों से मतदाता सूची से संबंधित दावे एवं आपत्तियां प्राप्त करेंगे।

30 सितंबर तक प्रस्तुत किए जा सकेंगे दावे एवं आपत्तियां

जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने बताया कि मतदाता सूची से संबंधित दावे एवं आपत्तियां 30 सितंबर 2026 तक प्रस्तुत की जा सकती हैं। नागरिक अपने क्षेत्र के संबंधित बीएलओ अथवा निर्वाचक पंजीयन अधिकारी से संपर्क कर मतदाता सूची से जुड़ी जानकारी एवं आवश्यक सहायता प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने जिला वासियों से अपील की कि वे विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान का अधिक से अधिक लाभ उठाएं और मतदाता सूची से संबंधित दावे एवं आपत्तियां निर्धारित समय सीमा में दर्ज करवाएं।

महिला आयोग की सदस्य भारती सैनी सोमवार को झज्जर में

महिला एवं बाल सुरक्षा से जुड़े संस्थानों का करेंगी निरीक्षण, अधिकारियों के साथ करेंगी बैठक

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 26 सितंबर

हरियाणा राज्य महिला आयोग की सदस्य भारती सैनी सोमवार 28 सितंबर को झज्जर जिला का दौरा करेंगी। इस दौरान वे विभिन्न सरकारी संस्थानों का दौरा एवं निरीक्षण करने के साथ संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक करेंगी। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार भारती सैनी प्रातः 9 बजे पीएम श्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय झज्जर, का दौरा करेंगी। इसके बाद प्रातः 10 बजे डीसी वर्षा खांगवाल के साथ बैठक करेंगी। प्रातः 11 बजे पुलिस उपायुक्त, मुख्यालय, झज्जर के साथ बैठक निर्धारित की गई है। इसके उपरांत आयोग की सदस्य दोपहर 12 बजे वे नागरिक अस्पताल, झज्जर का निरीक्षण करेंगी। इसके उपरांत दोपहर 1:30 बजे महिला थाना, झज्जर, 2:30 बजे वन स्टॉप सेंटर, झज्जर तथा 3:30 बजे झज्जर जेल का दौरा करेंगी।

बोर्ड परीक्षाओं के मद्देनजर परीक्षा केंद्रों के 200 मीटर दायरे में प्रतिबंधात्मक आदेश लागू

1 से 24 अक्टूबर तक आयोजित होंगी सेकेंडरी, सीनियर सेकेंडरी व डी.एल.एड. की परीक्षाएं

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 26 सितंबर। जिला मजिस्ट्रेट वर्षा खांगवाल ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 163 के तहत जिला झज्जर में हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी द्वारा आयोजित की जाने वाली बोर्ड परीक्षाओं को शांतिपूर्ण एवं सुचारू रूप से संपन्न करवाने के लिए प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए हैं। जारी आदेश के अनुसार जिला में सेकेंडरी, सीनियर सेकेंडरी तथा डी.एल.एड. की परीक्षाएं 1 अक्टूबर से 24 अक्टूबर 2026 तक निर्धारित परीक्षा केंद्रों पर आयोजित की जाएंगी। परीक्षाओं का समय दोपहर 2 बजे से शाम 5 बजे तक रहेगा।

परीक्षा केंद्रों के 200 मीटर दायरे में रहेगा प्रतिबंध

परीक्षा केंद्रों के आसपास कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने तथा परीक्षा प्रक्रिया में किसी प्रकार का व्यवधान रोकने के लिए परीक्षा केंद्रों के 200 मीटर के दायरे में पांच या पांच से अधिक व्यक्तियों के एकत्रित होने पर प्रतिबंध रहेगा। इस क्षेत्र में आग्नेयास्त्र, तलवार, लाठी, बरछा, कुल्हाड़ी, गंडासी, चाकू सहित अन्य हथियार लेकर चलने पर भी प्रतिबंध लगाया गया है।

फोटोस्टेट व साइबर कैफे भी रहेंगे बंद

आदेश के तहत परीक्षा केंद्रों के 200 मीटर के दायरे में स्थित फोटोस्टेट/जेरॉक्स की दुकानों तथा साइबर कैफे के संचालन पर भी प्रतिबंध रहेगा। ये प्रतिबंध 1 अक्टूबर से 24 अक्टूबर 2026 तक प्रतिदिन दोपहर 1 बजे से शाम 5:30 बजे तक प्रभावी रहेंगे। जिला मजिस्ट्रेट ने बताया कि ये आदेश ड्यूटी पर तैनात पुलिस बल एवं अन्य सरकारी कर्मचारियों पर लागू नहीं होंगे। दिव्यांग व्यक्तियों द्वारा लाठी के उपयोग तथा लंबे समय से चली आ रही परंपरा के तहत हथियार रखने के लिए अधिकृत समुदायों को निर्धारित शर्तों के अधीन छूट रहेगी। हालांकि, हिंसा करने अथवा कानून एवं सार्वजनिक व्यवस्था के लिए खतरा उत्पन्न करने की स्थिति में यह छूट समाप्त मानी जाएगी।

जिला मजिस्ट्रेट ने स्पष्ट किया है कि प्रतिबंधात्मक आदेशों का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता (BNS), 2023 की धारा 223 के तहत नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। प्रशासन ने विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं आमजन से अपील की है कि परीक्षा अवधि के दौरान प्रशासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करें तथा परीक्षा केंद्रों के आसपास अनावश्यक भीड़ एकत्रित न करें, ताकि परीक्षाएं शांतिपूर्ण एवं व्यवस्थित ढंग से संपन्न हो सकें।

Election Commission of India - Press Note No. ECI/PN/120/2026 दिनांक 26.09.2026, पर आधारित रिपोर्ट

चुनाव आयोग Full Commission का बड़ा ऐलान - SIR 20 राज्यों में पूरा, छूटे मतदाता अब भी जुड़ेंगे - BLO घर आएंगे, ऑनलाइन सुनवाई

दिल्ली में दावे–आपत्ति 30 अक्टूबर तक, महाराष्ट्र में 12 अक्टूबर तक बढ़े – गोवा में 81/97 मतदाताओं ने भरा फॉर्म–6
सुप्रीम कोर्ट ने SIR और फॉर्म–6 को दी मंजूरी – ECINet की जांच IIT/IIIT विशेषज्ञ करेंगे – Full Commission की बैठक में लिए गए 9 बड़े फैसले
स्रोत: निर्वाचन सदन, नई दिल्ली में 26 सितंबर 2026 को 3 बजे हुई Full Commission बैठक – जारीकर्ता: उप निदेशक P Pawan

दिल्ली में दावे–आपत्ति 30 अक्टूबर तक, महाराष्ट्र में 12 अक्टूबर तक बढ़े – गोवा में 81/97 मतदाताओं ने भरा फॉर्म–6
सुप्रीम कोर्ट ने SIR और फॉर्म–6 को दी मंजूरी – ECINet की जांच IIT/IIIT विशेषज्ञ करेंगे – Full Commission की बैठक में लिए गए 9 बड़े फैसले
स्रोत: निर्वाचन सदन, नई दिल्ली में 26 सितंबर 2026 को 3 बजे हुई Full Commission बैठक – जारीकर्ता: उप निदेशक P Pawan

रिपोर्ट:- संजय कुमार बाठला - प्रधान संपादक, परिवहन विशेष समाचार पत्र

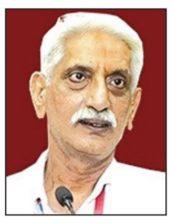

लोकतंत्र अब दफ्तर नहीं, घर-घर पहुंचेगा इस प्रेस नोट ने दो बड़े भ्रमों को खत्म किया है। पहला - SIR पूरा हो गया तो नाम जुड़ने का मौका खत्म? नहीं। दूसरा - IT सिस्टम में गड़बड़ी? आयोग ने कहा पूरी जांच IIT/IIIT से होगी।

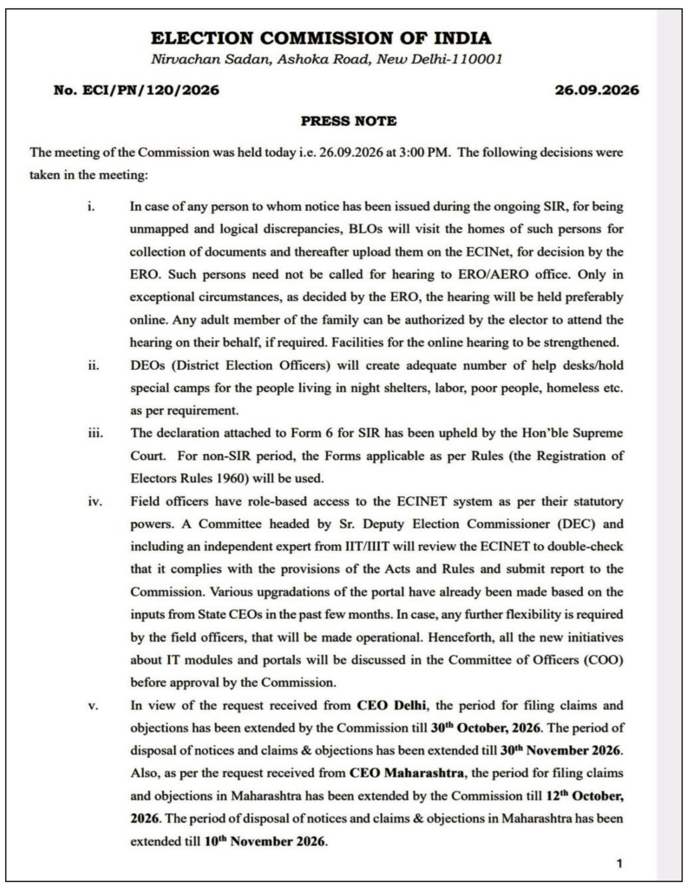

ELECTION COMMISSION OF INDIA
Nirvachan Sadan, Ashoka Road, New Delhi-110001

No. ECI/PN/120/2026 **26.09.2026**

PRESS NOTE

The meeting of the Commission was held today i.e. 26.09.2026 at 3:00 PM. The following decisions were taken in the meeting:

i. In case of any person to whom notice has been issued during the ongoing SIR, for being unmapped and logical discrepancies, BLOs will visit the homes of such persons for collection of documents and thereafter upload them on the ECINet, for decision by the ERO. Such persons need not be called for hearing to ERO/AERO office. Only in exceptional circumstances, as decided by the ERO, the hearing will be held preferably online. Any adult member of the family can be authorized by the elector to attend the hearing on their behalf, if required. Facilities for the online hearing to be strengthened.

ii. DEOs (District Election Officers) will create adequate number of help desks/hold special camps for the people living in night shelters, labor, poor people, homeless etc. as per requirement.

iii. The declaration attached to Form 6 for SIR has been upheld by the Hon'ble Supreme Court. For non-SIR period, the Forms applicable as per Rules (the Registration of Electors Rules 1960) will be used.

iv. Field officers have role-based access to the ECINET system as per their statutory powers. A Committee headed by Sr. Deputy Election Commissioner (DEC) and including an independent expert from IIT/IIIT will review the ECINET to double-check that it complies with the provisions of the Acts and Rules and submit report to the Commission. Various upgradations of the portal have already been made based on the inputs from State CEOs in the past few months. In case, any further flexibility is required by the field officers, that will be made operational. Henceforth, all the new initiatives about IT modules and portals will be discussed in the Committee of Officers (COO) before approval by the Commission.

v. In view of the request received from **CEO Delhi**, the period for filing claims and objections has been extended by the Commission till **30th October, 2026**. The period of disposal of notices and claims & objections has been extended till **30th November 2026**. Also, as per the request received from **CEO Maharashtra**, the period for filing claims and objections in Maharashtra has been extended by the Commission till **12th October, 2026**. The period of disposal of notices and claims & objections in Maharashtra has been extended till **10th November 2026**.

1

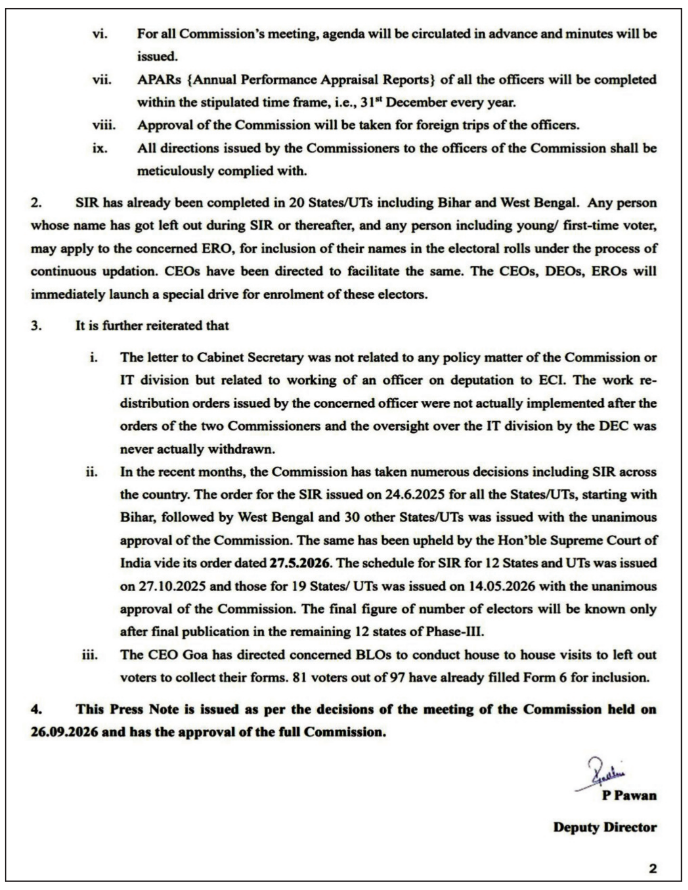

vi. For all Commission's meeting, agenda will be circulated in advance and minutes will be issued.

vii. APARs {Annual Performance Appraisal Reports} of all the officers will be completed within the stipulated time frame, i.e., 31st December every year.

viii. Approval of the Commission will be taken for foreign trips of the officers.

ix. All directions issued by the Commissioners to the officers of the Commission shall be meticulously complied with.

2. SIR has already been completed in 20 States/UTs including Bihar and West Bengal. Any person whose name has got left out during SIR or thereafter, and any person including young/ first-time voter, may apply to the concerned ERO, for inclusion of their names in the electoral rolls under the process of continuous updation. CEOs have been directed to facilitate the same. The CEOs, DEOs, EROs will immediately launch a special drive for enrolment of these electors.

3. It is further reiterated that

i. The letter to Cabinet Secretary was not related to any policy matter of the Commission or IT division but related to working of an officer on deputation to ECI. The work re-distribution orders issued by the concerned officer were not actually implemented after the orders of the two Commissioners and the oversight over the IT division by the DEC was never actually withdrawn.

ii. In the recent months, the Commission has taken numerous decisions including SIR across the country. The order for the SIR issued on 24.6.2025 for all the States/UTs, starting with Bihar, followed by West Bengal and 30 other States/UTs was issued with the unanimous approval of the Commission. The same has been upheld by the Hon'ble Supreme Court of India vide its order dated **27.5.2026**. The schedule for SIR for 12 States and UTs was issued on 27.10.2025 and those for 19 States/ UTs was issued on 14.05.2026 with the unanimous approval of the Commission. The final figure of number of electors will be known only after final publication in the remaining 12 states of Phase-III.

iii. The CEO Goa has directed concerned BLOs to conduct house to house visits to left out voters to collect their forms. 81 voters out of 97 have already filled Form 6 for inclusion.

4. This Press Note is issued as per the decisions of the meeting of the Commission held on 26.09.2026 and has the approval of the full Commission.

P Pawan
Deputy Director

2

मुख्य तथ्य - 5 भागों में पूरा प्रेस नोट

1. मतदाता के लिए सबसे बड़ी राहत - नागरिक-केंद्रित SIR (Point 1 के 5 फैसले):

- BLO घर जाएंगे: जिनको नोटिस मिला है, उनके घर BLO स्वयं दस्तावेज लेने जाएंगे, ECINet पर अपलोड करेंगे। ERO/AERO कार्यालय बुलाने की जरूरत नहीं।

- ऑनलाइन सुनवाई: असाधारण केस में ही सुनवाई, वो भी ऑनलाइन को प्राथमिकता। परिवार का कोई वयस्क अधिकृत होकर शामिल हो सकता है।

- मजदूर, गरीब, बेघर, नाइट शेल्टर के लिए Help Desk Camp: DEO विशेष कैंप लगाएंगे। यह ट्रांसपोर्ट मजदूरों, ड्राइवर-हेल्परों के लिए वरदान है।

- फॉर्म-6 बरकरार: सुप्रीम कोर्ट ने फॉर्म-6 की घोषणा को बरकरार रखा है।

- ECINet की सुरक्षा जांच: Sr. DEC की अध्यक्षता में IIT/IIIT के स्वतंत्र विशेषज्ञ की कमेटी तकनीकी और सुरक्षा ऑडिट करेगी। अधिकारियों को केवल उनकी वैधानिक भूमिका के अनुसार ही एक्सेस मिलेगा।

2. समय-सीमा में बड़ी राहत - दिल्ली और महाराष्ट्र (Extension):

- दिल्ली: CEO के अनुरोध पर दावे-आपत्ति की अंतिम तिथि 30 अक्टूबर 2026 तक और निपटारा 30 नवंबर 2026 तक।

- महाराष्ट्र: CEO के अनुरोध पर दावे-आपत्ति 12 अक्टूबर 2026 तक और निपटारा 10 नवंबर 2026 तक।

3. प्रशासनिक अनुशासन - Full Commission के सख्त निर्देश (Point vi-ix):

- आयोग की हर बैठक का एजेंडा पहले सर्कुलेट होगा, मिनट्स जारी होंगे।

- सभी अधिकारियों के APAR (Annual Performance Appraisal Reports) हर साल 31 दिसंबर तक पूरे करने अनिवार्य।

- विदेश दौरे के लिए आयोग की मंजूरी जरूरी।

- कमिश्नरों के सभी निर्देशों का अधिकारियों को अक्षरशः पालन करना होगा।

4. SIR की वर्तमान स्थिति - सबसे महत्वपूर्ण जानकारी (Point 2 & 3):

- SIR 20 राज्यों/UTs में पूरा हो चुका है, जिसमें बिहार और पश्चिम बंगाल शामिल हैं।

- जिसका नाम छूट गया है, युवा, पहली बार वोटर - वे निरंतर अद्यतन (Continuous Updation) के तहत फॉर्म-6 से नाम जुड़वा सकते हैं। CEO/DEO/ERO को इसके लिए विशेष अभियान चलाने को कहा गया है।

- गोवा मॉडल की सफलता: CEO गोवा ने BLO को घर-घर भेजा, 97 में से 81 छूटे मतदाताओं ने फॉर्म-6 भर दिया।

- भ्रम पर विराम: कैबिनेट सचिव को भेजा गया पत्र किसी नीतिगत मामले या IT डिवीजन से संबंधित नहीं था, बल्कि एक प्रतिनियुक्त अधिकारी के कामकाज से था। IT डिवीजन पर DEC की निगरानी जारी है।

- SIR सर्वसम्मत और सुप्रीम कोर्ट द्वारा अनुमोदित: SIR का आदेश 24.06.2025 को सर्वसम्मति से जारी हुआ था। इसे माननीय सुप्रीम कोर्ट ने 27.05.2026 के आदेश में बरकरार रखा। 12 राज्यों का शेड्यूल 27.10.2025 और 19 राज्यों/UTs का 14.05.2026 को जारी हुआ था। अंतिम मतदाता संख्या Phase-III के 12 राज्यों के अंतिम प्रकाशन के बाद पता चलेगी।

5. आधिकारिक पुष्टि (Point 4):

- यह प्रेस नोट 26.09.2026 की Full Commission बैठक के निर्णयों के अनुसार और Full Commission की मंजूरी से जारी किया गया है।

> परिवहन विशेष की जनहित अपील:

> 1. यदि आपका नाम SIR में नहीं आया है तो घबराएं नहीं - तुरंत अपने BLO से संपर्क करें या ECI हेल्प डेस्क पर Form-6 भरें।

> 2. ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर अपने ड्राइवरों, हेल्परों, लोडिंग मजदूरों को जो नाइट शेल्टर में रहते हैं, उन्हें इस कैंप की जानकारी दें।

> 3. कोई भी अधिकारी आपको ERO दफ्तर में अनावश्यक न बुलाए, ऑनलाइन सुनवाई आपका अधिकार है।

---पितृ पक्ष---

गरुड़ पुराण के अनुसार पितरों को खुश करने का सबसे अच्छा उपाय - सबसे सरल, सबसे शक्तिशाली और सबसे फलदायी ।।

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

गरुड़ पुराण में भगवान विष्णु ने गरुड़ जी से कहा - हे गरुड़, पितरों को खुश करने के लिए सोना, चाँदी, करोड़ों रुपये दान करने की जरूरत नहीं, पितर केवल भाव के भूखे हैं, जल के भूखे हैं, प्रेम के भूखे हैं। यदि पुत्र सच्चे मन से एक लोटा जल भी दे दे तो पितर 12 साल तक तृप्त रहते हैं।

पर आज कल लोग बहुत खर्चा करते हैं, दिखावा करते हैं, पर पितर खुश नहीं होते, क्योंकि विधि गलत होती है। इसीलिए गरुड़ पुराण में 7 सबसे अच्छे उपाय बताए हैं, जो यदि कोई कर ले तो उसके पितर 7 जन्म तक उसका साथ नहीं छोड़ते, उसे आशीर्वाद देते हैं।

सबसे पहला और सबसे अच्छा उपाय - तर्पण, तर्पण, और केवल तर्पण।

गरुड़ पुराण कहता है - दान से बड़ा, यज्ञ से बड़ा, तप से बड़ा है तर्पण। क्योंकि दान में घमंड आ सकता है, यज्ञ में पैसा लगता है, तप में शरीर दुखता है, पर तर्पण में केवल जल, काला तिल, और प्रेम लगता है।

तर्पण की विधि सबसे अच्छी -

रोज सुबह स्नान करके, सफेद वस्त्र पहनकर, कुशा की पवित्री पहनकर, दक्षिण दिशा में मुँह करके, तांबे के लोटे में जल, उसमें गंगाजल, काला तिल, जौ, कुशा, तुलसी दल मिलाकर, अपने हाथ की अंजलि में लेकर, पिता, दादा, परदादा का नाम लेकर 3-3 बार जल दें।

मंत्र - ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः, पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः, प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।

यदि रोज नहीं कर सकते तो केवल पितृ पक्ष में 16 दिन, अमावस्या को, और पिता की पुण्यतिथि को अवश्य करें। गरुड़ पुराण कहता है - जो पुत्र साल में केवल 16 दिन भी तर्पण करता है, उसके पितर साल भर तृप्त रहते हैं।

दूसरा सबसे अच्छा उपाय - गीता पाठ, विशेषकर 7वां अध्याय।

गरुड़ पुराण में एक कथा है - एक ब्राह्मण बहुत पापी था, मरा तो प्रेत बन गया, उसके पुत्र ने उसके नाम से गीता के 7वें अध्याय का पाठ किया, और वह प्रेत उसी क्षण मुक्त होकर स्वर्ग गया।

भगवान विष्णु कहते हैं - गीता मेरे मुख से निकली है, गीता का पाठ करने से पितर सीधे मेरे धाम वैकुंठ आते हैं।

यदि पूरा गीता नहीं पढ़ सकते तो केवल 7वां अध्याय पढ़ें, या केवल ये 2 श्लोक पढ़ें -

पितृणामार्यमा चास्मि, अहमात्मा गुडाकेश।

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो।

रोज गीता का एक पन्ना भी पितरों के नाम से पढ़ेंगे तो पितर प्रसन्न होंगे।

तीसरा सबसे अच्छा उपाय - पीपल के पेड़ की सेवा।

गरुड़ पुराण कहता है - पीपल में ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सभी पितर वास करते हैं। जो व्यक्ति पीपल के पेड़ पर जल चढ़ाता है, शाम को दीया जलाता है, पीपल की परिक्रमा करता है, उसके पितर कभी भूखे नहीं रहते।

विधि - रोज सुबह पीपल पर काले तिल मिला जल चढ़ाएं, और शाम को सरसों के तेल का दीया जलाएं, और बोलें - ॐ पितृभ्यो नमः। पीपल को कभी काटें नहीं, रविवार को पीपल पर जल न चढ़ाएं, केवल शनिवार और अमावस्या को पीपल की पूजा पितरों के लिए विशेष फलदायी है।

चौथा सबसे अच्छा उपाय - पंचबलि, यानी गाय, कौए, कुत्ते, चींटी, ब्राह्मण को भोजन।

गरुड़ पुराण कहता है - पितर 5 रूपों में आते हैं - गाय में, कौए में, कुत्ते में, चींटी में, ब्राह्मण में। जो पुत्र रोज अपनी थाली से 5 ग्रास निकालकर इन 5 को देता है, उसके पितर कभी रुष्ट नहीं होते।

विशेषकर कौए को रोटी, गाय को गुड़-रोटी, कुत्ते को रोटी, चींटी को आटा-शक्कर, ब्राह्मण को भोजन। पितृ पक्ष में तो यह अवश्य करना चाहिए। यदि रोज नहीं कर सकते तो अमावस्या को अवश्य करें।

पाँचवां सबसे अच्छा उपाय - गया श्राद्ध, या घर में पिंडदान।

गरुड़ पुराण कहता है - पितरों को सबसे ज्यादा प्रिय है पिंड। पिंड अर्थात चावल, जौ, काला तिल, शहद, घी, गंगाजल से बना गोला। जो पुत्र गया जाकर पिंडदान करता है, उसके 21 पीढ़ी के पितर मुक्त हो जाते हैं।

यदि गया नहीं जा सकते तो घर में ही अमावस्या को चावल के 3 पिंड बनाकर, काले तिल, घी, शहद लगाकर, पीपल के नीचे पितरों के नाम से रखें, और कौए को खाने दें। यह भी गया श्राद्ध के समान फल देता है।

छठा सबसे अच्छा उपाय - ब्राह्मण भोजन, और दक्षिणा।

पितरों तक भोजन ब्राह्मण के द्वारा ही जाता है। गरुड़ पुराण कहता है - भूखे ब्राह्मण को भोजन कराओ, वह तृप्त होगा तो पितर तृप्त होंगे। पितृ पक्ष में एक ब्राह्मण को भी यदि आपने पेट भर खीर-पूरी, सब्जी, दाल खिलाई, और दक्षिणा दी, तो आपके पितर 1 साल तक आशीर्वाद देंगे।

ब्राह्मण कैसा हो? लालची न हो, वेदपाठी हो, सात्विक हो। उसे भोजन कराते समय चप्पल न पहनें, प्रेम से भोजन कराएं, भोजन के बाद उसके पैर छुएं।

सातवां और सबसे बड़ा उपाय - जीते जी माता-पिता की सेवा।

गरुड़ पुराण का अंतिम और सबसे बड़ा वाक्य है - जीविते पितरौ सेव्या, मृते पिण्डं न दीयते, यदि पुत्र जीते जी माता-पिता को गाली देता है, भूखा रखता है, और मरे पर गया श्राद्ध भी करे तो पितर उसका पिंड नहीं लेते, वे थूक कर चले जाते हैं।

इसीलिए सबसे अच्छा उपाय है - जीते जी माता-पिता को प्रसन्न रखो, उनकी सेवा करो, उन्हें प्रेम दो, उन्हें भूखा मत रखो, उन्हें वृद्धाश्रम मत भेजो। जिस घर में जीते जी माता-पिता हँसते हैं, उस घर में मरे हुए पितर भी हँसते हैं।

एक अंतिम कथा -

एक पुत्र बहुत गरीब था, उसके पास श्राद्ध के लिए पैसा नहीं था, वह रोज रोता, हे पितर, मेरे पास कुछ नहीं। एक दिन ऋषि ने कहा - पुत्र, तू केवल दक्षिण दिशा में मुँह करके, दोनों हाथ जोड़कर कह दे - हे मेरे पितरों, मेरे पास कुछ नहीं, मैं आपको प्रणाम करता हूँ, आप मुझसे प्रसन्न हों। पुत्र ने वैसा ही किया, और उसी रात उसके पितर सपने में आए, कहा - पुत्र, हम तुझसे प्रसन्न हैं, तेरा प्रणाम ही हमारा श्राद्ध है।

इसीलिए गरुड़ पुराण कहता है - धन नहीं, भाव चाहिए। यदि भाव सच्चा है तो एक लोटा जल भी गया श्राद्ध के बराबर है, और यदि भाव नहीं तो करोड़ों का दान भी व्यर्थ है।

तो आज से ही शुरू करें - रोज एक लोटा जल, गीता का एक श्लोक, पीपल पर दीया, गाय को रोटी, और माता-पिता की सेवा - यही पितरों को खुश करने का सबसे अच्छा उपाय है।

॥इति गरुड़ पुराणे पितृ प्रसन्नता उपाय सम्पूर्ण ॥

पैकेटबंद भोजन पर RED ALERT

FSSAI का बड़ा फैसला! अब पैकेट के FRONT पर दिखेगा खतरे का लाल निशान

नमक, चीनी, फैट ज्यादा तो लाल HEXAGON में चेतावनी, सुप्रीम कोर्ट की सख्त निगरानी में नया नियम

टैगलाइन: सेहत का अधिकार - अब लेबल पर साफ-साफ दिखेगा

प्रकाशक: संजय कुमार बाठला - प्रधान संपादक, परिवहन विशेष

आपकी थाली पर किसकी नजर? भारत में हर साल डायबिटीज, हृदय रोग और मोटापे से लाखों मौतें होती हैं। कारण - पैकेटबंद खाने में छुपा हुआ नमक-चीनी-फैट। अब तक कंपनियां पीछे छोटे अक्षरों में लिख देती थीं, आम आदमी समझ ही नहीं पाता था। अब सुप्रीम कोर्ट ने इस छुपा-छुपी पर सख्ती दिखाई है।

न्यायिक आदेश और FSSAI की प्रतिक्रिया - तथ्य क्या हैं?

1. याचिका कहाँ से शुरू हुई?

- मामला: 3S And Our Health Society Vs. Union of India - पुणे की जनहित संस्था ने PIL दायर की।

- बेंच: माननीय न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला और के. विनोद चंद्रन की पीठ सुनवाई कर रही है। कोर्ट ने कहा था - "FSSAI कॉर्पोरेट दबाव में है, बच्चों की सेहत दांव पर है।"

- अगली सुनवाई: 28 सितंबर 2026 - इस दिन FSSAI का शपथपत्र (Affidavit) पर अंतिम आदेश होगा। कल राज्यों के साथ बैठक भी निर्धारित है।

2. FSSAI ने सुप्रीम कोर्ट में क्या कहा? (23 सितंबर 2026 को दायर 43 पेज का शपथपत्र)

FSSAI ने माना - लाल चेतावनी जरूरी है:

- पैकेट के FRONT के Top-Left पर लाल रंग का HEXAGON (छह कोना वाला) वार्निंग लेबल लगेगा। वह सफेद बैकग्राउंड में होगा ताकि साफ दिखे।

- उसमें लिखा होगा: 'HIGH SUGAR' / 'HIGH SALT' / 'HIGH FAT' / 'HIGHLY SWEETENED BEVERAGE'

- फॉन्ट का साइज पीछे के Nutrition Table से बड़ा होगा।

थ्रेशोल्ड किस आधार पर?

- ICMR-NIN Dietary Guidelines for Indians, 2024 के अनुसार - प्रति 100 ग्राम / 100 मिली पर Added Sugar, Added Fat और Salt की सीमा तय होगी। Total Sugar नहीं, Added Sugar को गिना जाएगा ताकि कंपनियां आर्टिफिशियल स्वीटनर न बढ़ा दें।

- NON-CALORIC SWEETENER वाले प्रोडक्ट पर भी अलग से FRONT पर चेतावनी अनिवार्य होगी।

दो फेज या एक फेज?

- पहले FSSAI ने कहा था: **Phase-1:** जो प्रोडक्ट 2 या अधिक न्यूट्रिएंट में हाई हो, उस पर लेबल। Phase-2: बाद में 1 न्यूट्रिएंट हाई होने पर भी लेबल।

- सुप्रीम कोर्ट ने 13 सवाल पूछे - "दो फेज क्यों? एक ही न्यूट्रिएंट भी खतरनाक है। टाइमलाइन फिक्स करो, रंग लाल बिंदु (Non-Veg निशान) से कन्फ्यूज न हो, साइज-डिजाइन साफ हो।"

- अब FSSAI ने माना है कि वह पहले दिन से ही Single Nutrient पर भी वार्निंग लागू करने को तैयार है।

टाइमलाइन:

- सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद 4 महीने में ड्राफ्ट नियम और इंडस्ट्री को 1 साल का Compliance Time देने का प्रस्ताव है ताकि रिफॉर्मुलेशन (नमक-चीनी कम करना) हो सके।

जनहित के लिए - पैकेट पर क्या देखना अनिवार्य है? परिवहन विशेष की पाठकों से अपील - 5 बिंदु चेकलिस्ट:

1. FRONT देखो, BACK नहीं: अब पीछे नहीं, सामने ऊपर बाएं कोने पर लाल षटकोण देखो। अगर लाल निशान है तो समझो ज्यादा नमक/चीनी/फैट है।

2. एक भी ज्यादा तो खतरनाक: पहले दो चीजें ज्यादा होने पर ही चेतावनी थी, अब एक भी ज्यादा हुई तो वार्निंग मिलेगी।

3. मीठा धोखा: "Diet", "Zero Sugar" लिखे ड्रिंक में अगर Non-Caloric Sweetener है तो उस पर भी चेतावनी होगी - बच्चों के लिए खासतौर पर खतरनाक।

4. छूट किसे? घी, तेल, नमक, चीनी, गुड़, शहद जैसे Single Ingredient वाले सामान पर यह लाल निशान नहीं लगेगा, क्योंकि वह खुद ही वह तत्व है। पर उनका भी मानक लेबलिंग जरूरी है।

5. स्कूलों में पढ़ाया जाएगा: सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र से पूछा है कि बच्चों को पैकेट पढ़ना कैसे सिखाओगे? पाठ्यक्रम में Nutritional Literacy जोड़ी जाए।

संपादकीय निष्कर्ष: यह फैसला कॉर्पोरेट के मुनाफे Vs. जनता की सेहत की लड़ाई है। WHO की स्टडी कहती है कि FRONT पर साफ चेतावनी से खरीदारी की आदत 20-30% बदलती है।

FSSAI का यह RED ALERT, भारत के 140 करोड़ लोगों के लिए ग्रीन सिग्नल है - स्वस्थ जीवन का।

सरकार, इंडस्ट्री और उपभोक्ता - तीनों को मिलकर इसे लागू करना होगा। इंडस्ट्री दलील दे रही है Per Serve लेबल चाहिए, पर कोर्ट ने कहा - जनता का स्वास्थ्य सर्वोपरि, राष्ट्रीय हित का मामला है।

संदेश: अगली बार पैकेट उठाएं तो सबसे पहले लाल षटकोण खोजें। लाल है तो सोचें, फिर खरीदें।

स्रोत: सुप्रीम कोर्ट में FSSAI का 23 सितंबर का शपथपत्र, Hindustan Times, ET Now की रिपोर्ट्स

मोहल्ले से बाज़ार तक: बदलती जीवनशैली

● डॉ. विजय गर्ग

लेखक डॉ. विजय गर्ग, परिवहन विशेष समाचार पत्र

मोहल्ला कभी केवल कुछ घरों का समूह नहीं हुआ करता था। वह एक छोटी-सी सामाजिक इकाई था, जहाँ लोग एक-दूसरे को जानते थे, सुख-दुख बाँटते थे और आवश्यकता पड़ने पर एक-दूसरे की मदद करते थे। मोहल्ले का दुकानदार परिवारों को पहचानता था, बच्चे गलियों में खेलते थे, बुज़ुर्ग शाम को साथ बैठते थे और त्योहार लोगों को और करीब ले आते थे। आज यह परिचित संसार धीरे-धीरे बदल रहा है। बाज़ार, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और व्यावसायिक गतिविधियाँ हमारे दैनिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनती जा रही हैं।

पारंपरिक मोहल्ले से आधुनिक बाज़ार तक की यह यात्रा हमारी बदलती जीवनशैली की एक बड़ी तस्वीर प्रस्तुत करती है।

व्यक्तिगत संबंधों से व्यावसायिक सुविधा तक

पारंपरिक मोहल्ले में कोई वस्तु खरीदना अक्सर किसी परिचित व्यक्ति से मिलने का अवसर भी होता था। स्थानीय दुकानदार केवल सामान बेचने वाला व्यक्ति नहीं होता था; वह मोहल्ले का परिचित चेहरा और समुदाय का एक हिस्सा होता था। बातचीत सहज रूप से होती थी और लेन-देन के साथ-साथ संबंध भी विकसित होते थे।

> पारंपरिक मोहल्ले में कोई वस्तु खरीदना अक्सर किसी परिचित व्यक्ति से मिलने का अवसर भी होता था। स्थानीय दुकानदार केवल सामान बेचने वाला व्यक्ति नहीं होता था; वह मोहल्ले का परिचित चेहरा और समुदाय का एक हिस्सा होता था। बातचीत सहज रूप से होती थी और लेन-देन के साथ-साथ संबंध भी विकसित होते थे। आधुनिक बाज़ार ने गति, विविधता और सुविधा प्रदान की है।

आधुनिक बाज़ार ने गति, विविधता और सुविधा प्रदान की है। सुपरमार्केट, मॉल और ऑनलाइन शॉपिंग प्लेटफॉर्म लोगों को वस्तुओं की तुलना करने, घर बैठे सामान मंगाने और उसे शीघ्र प्राप्त करने की सुविधा देते हैं। विशेष रूप से व्यस्त परिवारों के लिए इन बदलावों ने जीवन को काफी आसान बनाया है।

लेकिन सुविधा कभी-कभी व्यक्तिगत संपर्क को कम भी कर सकती है। डिजिटल माध्यम से किया गया ऑर्डर समय तो बचा सकता है, लेकिन वह हमेशा दुकानदार के साथ हुई आत्मीय बातचीत की गर्माहट नहीं दे सकता।

गलियों का बदलता चेहरा

जो मोहल्ले कभी मुख्यतः आवासीय हुआ करते थे, वहाँ अब दुकानें, कार्यालय, क्लीनिक, रेस्तराँ, कोचिंग सेंटर और विभिन्न सेवा प्रतिष्ठान दिखाई देते हैं। गलियाँ अधिक व्यस्त हो गई हैं और व्यावसायिक गतिविधियाँ उन स्थानों तक पहुँच गई हैं, जो कभी मुख्यतः घरों और सामुदायिक जीवन के लिए जाने जाते थे।

यह परिवर्तन आर्थिक अवसर पैदा करता है और लोगों के लिए सेवाओं को उनके घरों के करीब लाता है। दूसरी ओर, इससे यातायात, शोर, भीड़, पार्किंग की समस्या और सार्वजनिक स्थानों पर दबाव जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हो सकती हैं।

प्रश्न यह नहीं है कि विकास होना चाहिए या नहीं, बल्कि यह है कि क्या विकास हमारे मोहल्लों के चरित्र और रहने योग्य वातावरण को बनाए रखते हुए हो सकता है।

डिजिटल बाज़ार का विस्तार

यह परिवर्तन केवल भौतिक गलियों तक सीमित नहीं रहा। आज बाज़ार हमारे स्मार्टफोन के भीतर भी मौजूद है। भोजन, कपड़े, पुस्तकें, दवाइयाँ, इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ और अनगिनत अन्य सामान घर से बाहर निकले बिना खरीदे जा सकते हैं।

डिजिटल बाज़ार ने केवल हमारे खरीदारी करने के तरीके को ही नहीं बदला, बल्कि उपभोग के प्रति हमारी सोच को भी प्रभावित किया है। विज्ञापन, सुझाव और छूट लगातार हमें नए उत्पादों से परिचित कराते रहते हैं। खरीदारी कभी-कभी आवश्यकता की पूर्ति के बजाय मनोरंजन की गतिविधि भी बन जाती है।

ऐसे समय में जिम्मेदार उपभोग का महत्व और बढ़ जाता है।

आवश्यकता से इच्छा तक

पारंपरिक खरीदारी अक्सर आवश्यकता पर आधारित होती थी। आज उपभोक्तावादी संस्कृति लोगों को केवल इसलिए भी वस्तुएँ खरीदने के लिए प्रेरित कर सकती है क्योंकि वे फैशन में हैं, उनका विज्ञापन किया जा रहा है या वे आसानी से उपलब्ध हैं।

"मुझे इसकी आवश्यकता है" और "मुझे यह चाहिए" के बीच का अंतर समझना आज पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

स्वस्थ जीवनशैली का अर्थ आधुनिक बाज़ार को अस्वीकार करना नहीं है। इसका अर्थ है वास्तविक आवश्यकताओं और अनावश्यक उपभोग के बीच अंतर करने की समझ विकसित करना। धन की बचत, अपव्यय में कमी और सोच-समझकर की गई खरीदारी परिवार तथा पर्यावरण—दोनों के लिए लाभकारी हो सकती है।

बदलता सामाजिक जीवन

मोहल्ले कभी सामाजिक मेल-जोल के स्वाभाविक केंद्र हुआ करते थे। बच्चे बाहर मित्रों के साथ मिलते थे, बुज़ुर्ग परिचित स्थानों पर बैठते थे और पड़ोसी खुशी तथा कठिनाई के अवसरों पर सामूहिक रूप से एक-दूसरे का साथ देते थे।

> आधुनिक जीवनशैली अधिक निजी और व्यक्तिगत होती जा रही है। लोग एक-दूसरे के पास रहते हुए भी अपने पड़ोसियों के बारे में बहुत कम जानते हैं। डिजिटल संचार बढ़ा है, लेकिन वास्तविक सामाजिक संपर्क कभी-कभी कम हो जाता है।

आधुनिक जीवनशैली अधिक निजी और व्यक्तिगत होती जा रही है। लोग एक-दूसरे के पास रहते हुए भी अपने पड़ोसियों के बारे में बहुत कम जानते हैं। डिजिटल संचार बढ़ा है, लेकिन वास्तविक सामाजिक संपर्क कभी-कभी कम हो जाता है।

एक मजबूत मोहल्ले के लिए केवल सड़कें और इमारतें पर्याप्त नहीं हैं। वहाँ विश्वास, सहयोग, सार्वजनिक स्थान और लोगों के आपस में मिलने-जुलने के अवसर भी आवश्यक हैं।

विकास के मानवीय पक्ष को बचाना

आर्थिक विकास, रोजगार तथा वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता के लिए बाज़ार आवश्यक हैं। व्यावसायिक विकास मोहल्लों को अधिक सक्रिय और आर्थिक रूप से जीवंत बना सकता है। लेकिन विकास का संबंध मानवीय आवश्यकताओं से बना रहना चाहिए।

सुनियोजित मोहल्लों में पैदल चलने वालों, हरियाली, बच्चों, वरिष्ठ नागरिकों, सामुदायिक गतिविधियों और आवश्यक सेवाओं के लिए पर्याप्त स्थान होना चाहिए। व्यावसायिक विकास को आवासीय जीवन का पूरक बनना चाहिए, उस पर हावी नहीं होना चाहिए।

संतुलन की तलाश

वास्तविक चुनौती पुराने मोहल्ले और आधुनिक बाज़ार में से किसी एक को चुनने की नहीं, बल्कि दोनों के बीच संतुलन स्थापित करने की है।

हमें आधुनिक बाज़ार की सुविधाएँ चाहिए, लेकिन स्थानीय संबंधों की आत्मीयता खोए बिना। हमें तकनीक चाहिए, लेकिन उस पर पूरी तरह निर्भर हुए बिना। हमें आर्थिक गतिविधियाँ चाहिए, लेकिन स्वच्छ, शांत और रहने योग्य वातावरण की कीमत पर नहीं।

मोहल्ला बाज़ार के नीचे दबकर अपनी पहचान न खो दे। इसके बजाय बाज़ार मोहल्ले की आवश्यकताओं को पूरा करने वाला उपयोगी हिस्सा बने।

बदलती जीवनशैली, निरंतर जिम्मेदारी

मोहल्ले से बाज़ार तक की यात्रा अंततः बदलती मानवीय आवश्यकताओं, तकनीक और आकांक्षाओं की कहानी है। परिवर्तन स्वाभाविक है, लेकिन उन मूल्यों को भुलाया नहीं जाना चाहिए जो किसी समुदाय को सार्थक बनाते हैं।

एक आधुनिक मोहल्ले में दुकानें, डिजिटल सेवाएँ, रेस्तराँ और व्यवसाय हो सकते हैं, फिर भी वहाँ सामुदायिक भावना, संवेदनशीलता और मानवीय संबंधों को जीवित रखा जा सकता है।

प्रगति केवल अधिक बाज़ार, अधिक वस्तुएँ या तेज़ सेवाएँ उपलब्ध कराने का नाम नहीं है। वास्तविक प्रगति ऐसी जीवनशैली बनाने में है, जहाँ सुविधा और समुदाय, व्यापार और संवेदना, आधुनिकता और मानवीय मूल्य—साथ-साथ रह सकें।

हमारे शहर लगातार बदलते रहेंगे, लेकिन प्रश्न सरल है—

क्या बाज़ार मोहल्ले की सेवा करेगा, या मोहल्ला ही बाज़ार में अपनी पहचान खो देगा?

जीवनशैली में छिपा समाधान

लेखक डॉ. विजय गर्ग, परिवहन विशेष समाचार पत्र

आधुनिक जीवन ने हमें अभूतपूर्व सुविधाएं, आराम और तकनीक प्रदान की है। लेकिन इन लाभों के साथ-साथ बहुत से लोग तनाव, शारीरिक निष्क्रियता, अस्वास्थ्यकर खान-पान की आदतों, नींद की कमी और डिजिटल उपकरणों पर बढ़ती निर्भरता का सामना कर रहे हैं। हम अक्सर उन समस्याओं के जटिल समाधान खोजते हैं, जिनके कुछ सरल उत्तर हमारी दैनिक जीवनशैली में ही छिपे हो सकते हैं।

हमारी जीवनशैली केवल जीवन जीने का एक तरीका नहीं है; यह हमारे शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक कल्याण, रिश्तों और जीवन की समग्र गुणवत्ता को गहराई से प्रभावित करती है। दैनिक जीवन की छोटी-छोटी पसंद, यदि निरंतरता के साथ अपनाई जाएं, तो कभी-कभार किए जाने वाले बड़े प्रयासों से अधिक प्रभावी साबित हो सकती हैं।

सरल आदतों की शक्ति

स्वस्थ जीवनशैली के लिए हमेशा महंगे उपकरण, जटिल डाइट या बहुत बड़े बदलावों की आवश्यकता नहीं होती। नियमित शारीरिक गतिविधि, संतुलित भोजन, पर्याप्त नींद और उचित मात्रा में पानी—ये बुनियादी आदतें हैं, लेकिन इनके महत्वपूर्ण लाभ हो सकते हैं।

पैदल चलना, स्ट्रेचिंग करना, साइकिल चलाना, बागवानी करना या घरेलू कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेना शारीरिक निष्क्रियता को कम करने में मदद कर सकता है। यहां मुख्य बात पूर्णता नहीं, बल्कि निरंतरता है।

भोजन: दैनिक जीवन का एक विकल्प

भोजन हमारी जीवनशैली की सबसे स्पष्ट अभिव्यक्तियों में से एक है। आधुनिक आहार में अक्सर अत्यधिक प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ, चीनी, नमक और अस्वास्थ्यकर वसा शामिल होती हैं। इसके साथ ही मौसमी और स्थानीय रूप से उपलब्ध खाद्य पदार्थों पर आधारित पारंपरिक आहार हमें संतुलन और विविधता का महत्वपूर्ण पाठ सिखा सकता है।

सोच-समझकर भोजन करना, पौष्टिक खाद्य पदार्थों का चयन करना और अनावश्यक रूप से अधिक खाने से बचना स्वस्थ जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकता है।

नींद: भूली हुई औषधि

जीवन में अधिक से अधिक हासिल करने की दौड़ में नींद को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। देर रात तक स्क्रीन का उपयोग, अनियमित दिनचर्या और अत्यधिक काम स्वस्थ नींद के पैटर्न को प्रभावित कर सकते हैं।

पर्याप्त और नियमित नींद एकाग्रता, मनोदशा, सीखने की क्षमता और दैनिक कार्यक्षमता के लिए महत्वपूर्ण है। नींद को विलासिता नहीं, बल्कि आवश्यकता समझना जीवनशैली में एक महत्वपूर्ण बदलाव है।

बैठे-बैठे जीवन में सक्रियता

तकनीक ने दैनिक जीवन में शारीरिक श्रम की आवश्यकता को काफी कम कर दिया है। हम कार्यालयों में लंबे समय तक बैठते हैं, वाहनों से यात्रा करते हैं और घंटों स्क्रीन देखते रहते हैं।

दिनचर्या में थोड़ी-थोड़ी शारीरिक सक्रियता शामिल करना लाभकारी हो सकता है। कुछ समय बाद थोड़ी देर पैदल चलना, जहां उचित हो वहां लिफ्ट के बजाय सीढ़ियों का उपयोग करना और कुछ समय बाहर बिताना लंबे समय तक बैठे रहने को कम करने के सरल उपाय हैं।

संतुलन के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य

स्वस्थ जीवनशैली में मानसिक संतुलन भी शामिल है। लगातार आने वाले नोटिफिकेशन, सोशल मीडिया पर तुलना और सूचनाओं की अधिकता मन को थका सकती है।

परिवार के साथ समय बिताना, किताबें पढ़ना, अपने शौक पूरे करना, प्रकृति का आनंद लेना और सार्थक सामाजिक संबंध बनाए रखना मन को आवश्यक मानसिक विश्राम दे सकता है। कुछ समय के लिए तकनीक से दूरी बनाना भी ध्यान और एकाग्रता को पुनः बेहतर करने में मदद कर सकता है।

रिश्ते भी स्वास्थ्य का हिस्सा हैं

मनुष्य को सार्थक रिश्तों की आवश्यकता होती है। यदि जीवनशैली पूरी तरह प्रतिस्पर्धा, उत्पादकता और भौतिक सफलता पर केंद्रित हो जाए, तो परिवार और मित्रों के लिए समय कम हो जाता है।

किसी प्रियजन से बातचीत करना, साथ भोजन करना या जरूरतमंद की मदद करना भले ही छोटी बातें लगें, लेकिन ऐसे क्षण भावनात्मक संबंधों को मजबूत करते हैं और अपनत्व की भावना पैदा करते हैं।

प्रकृति एक शिक्षक के रूप में

प्रकृति हमें जीवनशैली के बारे में एक और सरल पाठ सिखाती है। पेड़ों के बीच टहलना, कुछ समय धूप में बिताना, ऋतुओं के बदलाव को महसूस करना या शांत प्राकृतिक वातावरण में कुछ समय बैठना मन में शांति और चिंतन की भावना पैदा कर सकता है।

आधुनिक जीवन अक्सर मनुष्य को प्रकृति से दूर कर देता है। प्रकृति से दोबारा जुड़ना हमें सादगी, धैर्य और संतुलन का महत्व याद दिला सकता है।

रोकथाम की शुरुआत दैनिक विकल्पों से

कई स्वास्थ्य समस्याओं पर आनुवंशिकता, पर्यावरण और जीवनशैली सहित अनेक कारकों का प्रभाव पड़ता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि केवल जीवनशैली ही हर बीमारी को रोक या ठीक कर सकती है। लेकिन स्वस्थ आदतें बेहतर स्वास्थ्य और निवारक देखभाल का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकती हैं।

इसलिए समाधान हमेशा किसी नई चीज की खोज में नहीं होता। कई बार समाधान उन कार्यों को बेहतर बनाने में होता है, जिन्हें हम हर दिन करते हैं।

जागरूकता से व्यवहार तक

स्वस्थ जीवन के बारे में जानना ही पर्याप्त नहीं है। वास्तविक चुनौती इस ज्ञान को व्यवहार में बदलने की है।

अवास्तविक संकल्प लेने के बजाय छोटी और व्यावहारिक शुरुआत की जा सकती है—नियमित रूप से टहलना, सोच-समझकर भोजन करना, समय पर सोना, अनावश्यक स्क्रीन उपयोग को सीमित करना तथा रिश्तों और मनोरंजन के लिए समय निकालना।

छोटे बदलाव जब लगातार दोहराए जाते हैं, तो वे प्रभावशाली बन जाते हैं।

टिकाऊ जीवनशैली

स्वस्थ जीवनशैली टिकाऊ भी होनी चाहिए। अत्यधिक प्रतिबंधों को लंबे समय तक बनाए रखना कठिन होता है। ऐसा संतुलित दृष्टिकोण, जिसमें जीवन का आनंद भी बना रहे और संयम भी हो, दीर्घकालीन स्वास्थ्य के लिए अधिक व्यावहारिक है।

लक्ष्य पूर्णता नहीं, बल्कि निरंतरता, जागरूकता और संतुलन होना चाहिए।

समाधान शायद हमारी सोच से भी करीब है

हम अक्सर समाधान के लिए अपने से बाहर देखते हैं—नई तकनीक, महंगे उपचार, जटिल कार्यक्रम या त्वरित उपाय। लेकिन कुछ उत्तर शायद पहले से ही हमारी जीवनशैली में मौजूद हैं।

अधिक सक्रिय दिन, पौष्टिक भोजन, पर्याप्त नींद, सार्थक रिश्ते, प्रकृति के साथ समय और तकनीक का संतुलित उपयोग मिलकर हमारे दैनिक जीवन को बेहतर बना सकते हैं।

जीवनशैली में छिपा समाधान कोई जादुई फार्मूला नहीं है। यह केवल एक सरल याद दिलाता है—बेहतर जीवन अक्सर बेहतर दैनिक विकल्पों से शुरू होता है।

जब छोटी-छोटी स्वस्थ आदतें हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन जाती हैं, तो जीवनशैली स्वयं एक स्वस्थ, खुशहाल और संतुलित जीवन के लिए हमारा सबसे मूल्यवान संसाधन बन सकती है।

तेल की धार पर टिकी दुनिया - अगले 7 दिन तय करेंगे वैश्विक अर्थव्यवस्था का गणित

ईरान का 7 - दिवसीय होर्मुज़ प्रस्ताव Vs ट्रंप-शी की नई आर्थिक जुगलबंदी - भारत के बाजार, रुपया और महंगाई की अग्निपरीक्षा

होर्मुज़ खुला तो राहत, टकराव बढ़ा तो $110 पार तेल - क्या विश्व नए ऊर्जा संकट के मुहाने पर?

लेखक: एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया, महाराष्ट्र

फारस की खाड़ी से दलाल स्ट्रीट तक एक ही धड़कन वैश्विक अर्थव्यवस्था का केंद्र इस समय न वॉल स्ट्रीट है, न दावोस। केंद्र है होर्मुज़ जलडमरूमध्य का ३९ किमी का संकरा रास्ता, जहाँ से दुनिया का २०% तेल गुज़रता है। एक ओर ईरान ने 7 दिन में सामान्य आवागमन बहाली का प्रस्ताव दिया है, दूसरी ओर ट्रंप-शी ने 30 अरब डॉलर के नए व्यापारिक समीकरण बनाए हैं। इस लेख में पूरे संकट का समग्र विश्लेषण।

मुख्य तथ्य और आंकड़े - जो बाजार हिला रहे हैं

1. होर्मुज़ संकट - दुनिया की सांस अटकी है

- ईरान के विदेश मंत्री का २५ सितंबर को UN में बयान: "अमेरिकी सैन्य व आर्थिक दबाव में राहत की शर्तों पर 7 दिन में होर्मुज़ में सामान्य जहाजरानी बहाल कर सकते हैं। निर्णय अमेरिका के हाथ में।"
- २६ सितंबर तक स्थिति अनिश्चित। अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा प्रस्ताव अस्वीकार करने की मीडिया रिपोर्ट, पर ईरान आधिकारिक जवाब का इंतजार कर रहा है।
- जोखिम: खाड़ी-ए-ओमान में जहाज-से-जहाज तेल हस्तांतरण क्षमता फुल, बीमा-भाड़ा लागत ३ गुना बढ़ने की आशंका।

२. कच्चे तेल का रोलर-कोस्टर

- २२ सितंबर: वार्ता की उम्मीद में ब्रेंट $98.9 प्रति बैरल
- २४ सितंबर: तनाव से उछलकर $105.6 (+२.4%)
- २६ सितंबर: कूटनीतिक उम्मीद से १% गिरकर $104.30 पर - फिर भी ऊंचा

३. भारत पर सीधा वार - बाजार, रुपया, महंगाई

- २४ सितंबर २०२६: शेयर बाजार में 10 सप्ताह की सबसे बड़ी गिरावट - सेंसेक्स 1,२48 अंक (1.67%) टूटकर 73,580.54 पर, निफ्टी 1.64% गिरकर २३,०63.10 पर। कारण: महंगा तेल + बीमा कमीशन नियम पर चिंता।
- रुपया: २२ सितंबर को 95.59 प्रति डॉलर पर बंद - आयात बिल बढ़ने से दबाव।
- RBI चिंता: अगस्त MPC बैठक में आपूर्ति-जनित महंगाई के फैलने का अलर्ट, ब्याज दर बढ़ने के संकेत।

4. ट्रंप-शी वाशिंगटन वार्ता - दूसरा बड़ा समीकरण

- 30 अरब डॉलर की गैर-संवेदनशील वस्तुओं पर अनुकूल शुल्क पर सहमति।
- अमेरिका से निर्यात: कृषि उत्पाद, मछली, लकड़ी, सौंदर्य प्रसाधन, चिकित्सा उपकरण।
- चीन से आयात: छोटे घरेलू उपकरण, खिलौने, उपभोक्ता वस्तुएं।
- ऊर्जा डील: चीन २०२7 और २०२8 में हर साल अमेरिका से 1 करोड़ मीट्रिक टन कोयला खरीदेगा।
- दुर्लभ खनिज (Rare Earth) और उभरती टेक्नोलॉजी पर नया संवाद तंत्र।
- दोनों सहमत: "ईरान परमाणु हथियार न हासिल करे, कोई देश अंतरराष्ट्रीय जलमार्ग पर शुल्क न लगाए।"

5. UN में भू-राजनीतिक टकराव

- २4 सितंबर, 81वीं UN महासभा: इजराइल PM के संबोधन पर 77+ देशों के प्रतिनिधि वॉकआउट।

परिवहन विशेष का विश्लेषण: भारत के लिए क्या करें?

1. परिवहन क्षेत्र पर सबसे पहला असर: तेल $105 से ऊपर रहा तो डीजल-पेट्रोल 5-7 रु बढ़ सकता है। माल भाड़ा, बस किराया, लॉजिस्टिक्स लागत सीधे बढ़ेगी। ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स को 7 दिन अलर्ट रहना होगा।

२. दो परिदृश्य - अगले 7 दिन निर्णायक:
- राहत परिदृश्य (होर्मुज़ खुला): तेल $95 तक आ सकता है, सेंसेक्स में 1500+ अंकों की रिकवरी, रुपया मजबूत।
- टकराव परिदृश्य (कूटनीति फेल): तेल $110-$115 पार, महंगाई 6% से ऊपर, RBI को दरें बढ़ानी पड़ सकती हैं।

३. भारत के लिए 4- सूत्रीय सुरक्षा कवच:
- ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण (रूस, अमेरिका, खाड़ी से संतुलन)
- रणनीतिक तेल भंडार को मजबूत करना
- आपूर्ति श्रृंखला में वैकल्पिक समुद्री मार्गों की तैयारी
- घरेलू EV और वैकल्पिक ईंधन पर तेज़ी

> **निष्कर्ष:** दुनिया की निगाह अब वाशिंगटन, तेहरान, बीजिंग या न्यूयॉर्क पर नहीं, बल्कि होर्मुज़ के उस समुद्री रास्ते पर है जहाँ से अगला सिग्नल मुंबई के सेंसेक्स से लेकर आम आदमी की रसोई तक का बजट बदल देगा। भारत के लिए संदेश साफ है - वैश्विक अनिश्चितता में आत्मनिर्भर ऊर्जा ही सबसे बड़ा बीमा है।

सेवा से शिक्षा, सामाजिक चेतना और संवेदना: दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित PGDAV College (M) की NSS (National Service Scheme) की गतिविधियों के माध्यम से युवा शक्ति, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय सरोकारों की अभिव्यक्ति

रिपोर्ट:- डॉ इंदु दत्ता
प्रस्तुतकर्ता:- मीनाक्षी गुप्ता
परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जित करना, परीक्षा उत्तीर्ण करना और रोजगार की तैयारी करना नहीं है बल्कि शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है विद्यार्थी को अपने समय और समाज से जोड़ना। जब कोई विद्यार्थी अपने आसपास के लोगों की समस्याओं को समझने लगता है, दूसरों के सुख-दुःख के प्रति संवेदनशील होता है और अपनी क्षमता के अनुसार समाज के लिए कुछ करने की इच्छा रखता है तब शिक्षा अपने व्यापक अर्थ में सार्थक होती है।

महाविद्यालय में अध्यापन के दौरान यह अनुभव बार-बार होता है कि विद्यार्थियों में ऊर्जा और उत्साह की कोई कमी नहीं होती। वे बहुत कुछ करना चाहते हैं, अपने आसपास के संसार को समझना चाहते हैं और नए अनुभव प्राप्त करना चाहते हैं। आवश्यकता केवल उन्हें ऐसे अवसर उपलब्ध करवाने की है जहां उनकी ऊर्जा रचनात्मक दिशा में लगे। राष्ट्रीय सेवा योजना यानि NSS इस दृष्टि से विद्यार्थियों और समाज के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु का कार्य करती है।

भारत सरकार का युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय (Ministry of Youth Affairs & Sports) राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से युवाओं को सामुदायिक सेवा और सामाजिक जागरूकता से जोड़ने के व्यापक प्रयासों का हिस्सा है। मंत्रालय की रिपोर्ट में NSS की गतिविधियों में रक्तदान, स्वास्थ्य शिक्षा, सामाजिक सेवा, वृद्धाश्रमों तथा अन्य संस्थाओं में सेवा और विभिन्न विषयों पर जागरूकता कार्यक्रमों को शामिल किया गया है।

इसी व्यापक उद्देश्य और मंत्रालय द्वारा निर्धारित सामाजिक सरोकारों को ध्यान में रखते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी महाविद्यालय (प्रातः) में प्राचार्य प्रोफेसर दरविंदर कुमार और असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ प्रकाश उप्रेति के सहयोग से महाविद्यालय की NSS इकाई द्वारा हाल ही में कई महत्वपूर्ण गतिविधियां आयोजित की गईं। इनमें रक्तदान शिविर, NSS दिवस के अवसर पर वृद्धाश्रम में जाकर वरिष्ठ नागरिकों के साथ संवाद तथा नशा-मुक्ति और स्वास्थ्य-जागरूकता से जुड़े कार्यक्रम विशेष रूप से उल्लेखनीय रहे।

इन कार्यक्रमों की विशेषता यह रही कि विद्यार्थियों को केवल किसी आयोजन का हिस्सा नहीं बनाया गया बल्कि उन्हें उन विषयों से जोड़ा गया जो आज हमारे समाज और विशेष रूप से युवा पीढ़ी के लिए महत्वपूर्ण हैं।

रक्तदान : अनजान जीवन से जुड़ने का अनुभव –

महाविद्यालय में 26 सितंबर 2026, सोमवार को आयोजित रक्तदान शिविर इस श्रृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी रहा। यह शिविर आर्मी फोर्सेज, दिल्ली कैंट के माध्यम से तथा भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय से जुड़े युवा-जागरूकता कार्यक्रमों के संदर्भ में आयोजित किया गया। लेफ्टिनेंट कर्नल श्रीमान राव, उनके 13 सहयोगियों तथा NSS के कर्मठ स्वयंसेवकों अध्यक्ष वंश, उपाध्यक्ष यश, सचिन वंशिका, सह सचिव और कोषाध्यक्ष प्रिंस और उनकी टीम की देखरेख में प्रातः 8:00 बजे से अपराहन 3:00 बजे तक एनएसएस के शिविर में विद्यार्थियों ने अत्यंत उत्साह के साथ भाग लिया और 209 विद्यार्थियों ने रक्तदान में बढ़-चढ़कर भाग लिया और रक्तदान किया। महाविद्यालय के कुछ शिक्षकों जैसे डॉ. इंदु दत्ता, डॉ प्रस्तावना, डॉ. मोनिका, डॉ मोना, डॉ अक्षय, डॉ भानु कुमार, डॉ तान्या जैन, दो पिंकी स्वामी आदि ने भी रक्तदान कर इस सामाजिक पहल में सहभागिता की। NSS डायरेक्टरेट कार्यालय से यूथ ऑफिसर सुश्री रितिका, ऑफिसर श्रीमान राकेश जी, ऑफिसर श्रीमान विशाल जी और ऑफिसर श्रीमान सुमेर जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। स्वयंसेवकों द्वारा बनाई गई पेंटिंग आर्मी फोर्सज को प्रदान की गई

एक शिक्षक के रूप में मुझे इस कार्यक्रम में सबसे महत्वपूर्ण बात यह लगती है कि विद्यार्थियों ने रक्तदान को केवल एक गतिविधि के रूप में नहीं देखा। उनके लिए यह किसी दूसरे मनुष्य के जीवन के प्रति अपनी जिम्मेदारी व्यक्त करने का अवसर था। रक्तदान का सबसे मानवीय पक्ष यही है कि रक्त देने वाला व्यक्ति प्रायः यह नहीं जानता कि उसका रक्त किसके काम आएगा। कोई व्यक्तिगत परिचय नहीं, कोई पारिवारिक संबंध नहीं और किसी प्रतिफल की अपेक्षा भी नहीं। केवल यह भावना कि यदि मेरे योगदान से किसी जरूरतमंद व्यक्ति को सहायता मिलती है तो मुझे यह करना चाहिए।

दुर्घटनाओं, गंभीर बीमारियों और विभिन्न चिकित्सकीय परिस्थितियों में रक्त की आवश्यकता पड़ सकती है। ऐसे समय में रक्त की उपलब्धता किसी परिवार के लिए आशा का आधार बन सकती है। इसलिए रक्तदान को केवल चिकित्सा व्यवस्था का हिस्सा मानना पर्याप्त नहीं है; यह नागरिक जिम्मेदारी और सामाजिक सहयोग की भावना से भी जुड़ा हुआ है।

NSS की गतिविधियों में रक्तदान को लंबे समय से सामाजिक सेवा और स्वास्थ्य-जागरूकता के महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में स्थान दिया गया है। भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय की NSS संबंधी रिपोर्टों में भी रक्तदान और स्वास्थ्य-जागरूकता गतिविधियों का उल्लेख मिलता है। इस दृष्टि से 209 विद्यार्थियों की सहभागिता महज एक आंकड़ा नहीं बल्कि युवाओं में सामाजिक भागीदारी की एक सकारात्मक अभिव्यक्ति है।

जैसा कि मैंने पहले भी बताया कि रक्तदान शिविर में कुछ शिक्षकों की सहभागिता भी उल्लेखनीय रही। विद्यार्थियों के लिए शिक्षक केवल विषय-वस्तु समझाने वाले व्यक्ति नहीं होते। वे अपने आचरण के माध्यम से भी बहुत कुछ सिखाते हैं। जब शिक्षक स्वयं किसी सामाजिक गतिविधि में भाग लेते हैं, तो विद्यार्थियों को यह संदेश मिलता है कि सेवा केवल भाषण या पाठ्यक्रम का विषय नहीं है। यह जीवन में अपनाई जाने वाली जिम्मेदारी भी है।

मेरे विचार से शिक्षा का यही व्यवहारिक पक्ष सबसे अधिक प्रभावी होता है। हम कक्षा में सामाजिक उत्तरदायित्व पर कितना भी बोलें लेकिन जब विद्यार्थी अपने शिक्षक को स्वयं रक्तदान करते हुए देखता है तो वह उस मूल्य को कहीं अधिक सहजता से ग्रहण करता है। कार्यक्रम में कुल 117 स्वयंसेवकों की उपस्थिति रही।

NSS दिवस : वृद्धजनों के साथ संवाद

25 सितंबर 2026 को NSS दिवस के अवसर पर पीजीडीएवी महाविद्यालय (प्रातः) की NSS इकाई के स्वयंसेवकों ने वृद्धाश्रम का भ्रमण किया। वहां उन्होंने वृद्ध बंधुओं और बहनों के साथ बातचीत की, उनके जीवन के अनुभव सुने और कुछ समय उनके साथ बिताया।

यह गतिविधि सेवा के एक ऐसे पक्ष को सामने लाती है जिसे हम कई बार नजरअंदाज कर देते हैं। हम प्रायः सेवा का अर्थ आर्थिक सहायता, वस्तुओं का वितरण या किसी भौतिक आवश्यकता की पूर्ति मान लेते हैं। लेकिन मनुष्य को कई बार वस्तुओं से अधिक आवश्यकता होती है—समय, संवाद और अपनत्व की।

विशेषकर वृद्धावस्था में किसी का साथ बैठना, उसकी बात ध्यान से सुनना और उसके अनुभवों को महत्व देना अपने आप में एक महत्वपूर्ण मानवीय कार्य है।

NSS की गतिविधियों में वृद्धाश्रम, अनाथालय और सामाजिक सेवा संस्थाओं से जुड़ना कोई आकस्मिक विषय नहीं है। भारत सरकार की NSS संबंधी रूपरेखा में सामाजिक सेवा के अंतर्गत old-age homes तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं में कार्य को भी स्थान दिया गया है।

इसलिए पीजीडीएवी के 35 स्वयंसेवकों का प्रोग्राम ऑफिसर डॉ इंदु दत्ता, डॉ तान्या जैन व डॉ प्रस्तावना मोहन के साथ वृद्धाश्रम जाना NSS की मूल भावना के अनुरूप एक सार्थक गतिविधि रही।

आज की युवा पीढ़ी और वरिष्ठ पीढ़ी के जीवन अनुभवों में काफी अंतर है। तकनीक, संचार और जीवन शैली में आए बदलावों ने इस दूरी को और स्पष्ट किया है। ऐसे समय में दोनों पीढ़ियों के बीच संवाद की आवश्यकता बढ़ जाती है।

वृद्धजनों के पास जीवन के अनुभवों की लंबी पूंजी होती है। उन्होंने परिवारों और समाज में आए अनेक परिवर्तन देखे हैं। उनके अनुभवों में संघर्ष भी है, उपलब्धियां भी हैं और समय के साथ बदलती परिस्थितियों की समझ भी।

जब विद्यार्थी उनके साथ बैठते हैं और उनकी बातें सुनते हैं तो यह केवल वृद्धजनों के लिए आत्मीय अनुभव नहीं होता; विद्यार्थी स्वयं भी कुछ सीखते हैं। कई बार शिक्षा का सबसे अच्छा पाठ किसी किताब में नहीं बल्कि किसी अनुभवी व्यक्ति की जीवन-कथा में मिलता है।

वृद्धाश्रम की यह यात्रा विद्यार्थियों को यह समझने का अवसर देती है कि समाज में प्रत्येक पीढ़ी की अपनी भूमिका और गरिमा है। वरिष्ठ नागरिक केवल हमारी सामाजिक व्यवस्था के लाभार्थी नहीं हैं; वे हमारे सामूहिक अनुभव और स्मृति के महत्वपूर्ण वाहक भी है।

इस कार्यक्रम से एक और महत्वपूर्ण बात सामने आती है—सेवा का अर्थ हमेशा कुछ देना नहीं होता।

* किसी व्यक्ति को अपना समय देना भी सेवा है।
* किसी की बात ध्यान से सुनना भी सेवा है।
* किसी अकेले व्यक्ति को कुछ समय के लिए यह अनुभव करवाना कि कोई उसकी बात सुनने वाला है, यह भी सेवा है।

NSS स्वयंसेवकों का यह प्रयास इसी मानवीय दृष्टि को मजबूत करता है। विद्यार्थी जब ऐसी गतिविधियों में भाग लेते हैं तो उनके भीतर संवेदना केवल विचार के रूप में नहीं बल्कि अनुभव के रूप में विकसित होती है।

नशा-मुक्ति : युवा भविष्य की चिंता

25 सितंबर 2026, शुक्रवार को 'नशा-मुक्ति अभियान' के अंतर्गत महाविद्यालय में विद्यार्थियों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के अंतर्गत चलने वाली युवा-जागरूकता और NSS की व्यापक सामाजिक सेवा भावना के अनुरूप आयोजित किया गया। कार्यक्रम में पुलिस विभाग के एडिशनल एसएचओ श्रीमान सुरेंद्र शर्मा ने लगभग एक घंटे का ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि ₹नशा-मुक्ति आज के समय में विशेष रूप से युवाओं से जुड़ा हुआ महत्वपूर्ण विषय है। किसी भी समाज का भविष्य उसकी युवा पीढ़ी से जुड़ा होता है। इसलिए युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक करना केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य की चिंता नहीं बल्कि समाज के भविष्य की चिंता भी है।₹ उन्होंने कहा कि ₹इस विषय पर केवल निषेध की भाषा पर्याप्त नहीं है। युवाओं के साथ संवाद आवश्यक है। उन्हें यह समझना जरूरी है कि जीवन में आने वाले तनाव, असफलता, दबाव या निराशा का सामना करने के लिए स्वस्थ विकल्प मौजूद हैं। खेल, साहित्य, संगीत, कला, सामाजिक सेवा और अन्य रचनात्मक गतिविधियां युवा ऊर्जा को सकारात्मक दिशा दे सकती हैं। महाविद्यालय इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।₹

श्री सुरिंदर शर्मा के व्याख्यान ने कक्ष में उपस्थित 65 विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभावों और उससे जुड़े सामाजिक पक्षों को समझने का अवसर दिया। ऐसे कार्यक्रमों की उपयोगिता इसी में है कि वे युवाओं को किसी समस्या के बारे में सोचने, प्रश्न करने और सही जानकारी प्राप्त करने का अवसर देते हैं।

नशा-मुक्ति व्याख्यान के साथ-साथ डॉ. आशना जो साइकोलॉजिस्ट भी हैं तथा सुश्री मंजू जी के सहयोग से मेडिकल कैंप का आयोजन किया गया। इस प्रकार नशा-मुक्ति के विषय को स्वास्थ्य-जागरूकता से भी जोड़ा गया।

युवावस्था में विद्यार्थी सामान्यतः अपने स्वास्थ्य को लेकर बहुत गंभीर नहीं होते। पढ़ाई, परीक्षा, करियर और अन्य गतिविधियों के बीच स्वास्थ्य कई बार प्राथमिकता सूची में पीछे चला जाता है। ऐसे में मेडिकल कैंप विद्यार्थियों को अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत करने का उपयोगी माध्यम बनता है।

स्वास्थ्य केवल बीमारी के इलाज का विषय नहीं है। यह जीवनशैली से भी जुड़ा है—हम क्या खाते हैं, कितना सक्रिय रहते हैं, पर्याप्त विश्राम लेते हैं या नहीं और अपने शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य को कितनी गंभीरता से लेते हैं।

इसलिए नशा-मुक्ति और स्वास्थ्य-जागरूकता को एक साथ देखना अधिक उपयोगी है। एक ओर युवाओं को हानिकारक आदतों से दूर रहने के लिए जागरूक किया गया तो दूसरी ओर स्वस्थ जीवन के महत्व को समझने का अवसर दिया गया। स्वास्थ्य शिविर में महाविद्यालय के 85 विद्यार्थियों के साथ-साथ टीचिंग और नॉन टीचिंग विभाग ने भी अपने स्वास्थ्य की जांच करवाई।

इन कार्यक्रमों का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि NSS की गतिविधियां केवल महाविद्यालय परिसर तक सीमित सोच का परिणाम नहीं हैं। भारत सरकार के Ministry of Youth Affairs & Sports के व्यापक युवा एवं NSS कार्यक्रमों में स्वास्थ्य, रक्तदान, सामाजिक सेवा और विभिन्न जन-जागरूकता अभियानों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। मंत्रालय की रिपोर्ट में वर्ष 2024–25 के दौरान NSS इकाइयों द्वारा बड़ी संख्या में awareness programmes, rallies और campaigns आयोजित किए जाने का उल्लेख है।

इस प्रकार जब महाविद्यालय की NSS इकाई रक्तदान, वृद्धजन सेवा, नशा-मुक्ति और स्वास्थ्य-जागरूकता जैसे विषयों को लेकर कार्यक्रम करती है तो वह व्यापक राष्ट्रीय युवा-सेवा दृष्टि से भी जुड़ती है।

मेरे विचार से इसकी सबसे बड़ी विशेषता यही है कि राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित सामाजिक सरोकार जब स्थानीय स्तर पर विद्यार्थियों की गतिविधियों का विषय बनते हैं तो वे अधिक जीवंत और प्रभावी हो जाते हैं।

किसी मंत्रालय की योजना या राष्ट्रीय अभियान तभी सार्थक होता है जब उसका संदेश विद्यार्थियों और समाज के बीच व्यवहार में दिखाई दे। NSS इस काम के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

महाविद्यालयों को केवल डिग्री देने वाले संस्थान के रूप में देखना आज पर्याप्त नहीं है। उच्च शिक्षा का उद्देश्य ऐसे युवाओं को तैयार करना भी है जो समाज को समझें और उसमें अपनी सकारात्मक भूमिका पहचानें।

- एक विद्यार्थी रक्तदान करता है तो वह नागरिक जिम्मेदारी सीखता है।
- वृद्धाश्रम जाता है तो वह संवेदना और संवाद का महत्व समझता है।
- नशा-मुक्ति कार्यक्रम में भाग लेता है तो अपने भविष्य के प्रति अधिक सजग होता है।
- मेडिकल कैंप में स्वास्थ्य जांच करवाता है तो अपने शरीर और जीवनशैली के प्रति जिम्मेदारी समझता है।

इन अनुभवों का कोई अलग परीक्षा-पत्र नहीं होता लेकिन ये विद्यार्थी के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं।

यही कारण है कि NSS की गतिविधियों को पाठ्यक्रम से बाहर की गतिविधि भर नहीं मानना चाहिए। ये शिक्षा का वह हिस्सा हैं जो जीवन के साथ सीधे जुड़ा हुआ है।

हमारे देश की युवा शक्ति के सामने अनेक अवसर हैं तो उसी के साथ अनेक चुनौतियां भी हैं। महाविद्यालयों की भूमिका है कि युवाओं को ऐसे अवसर दिए जाएं जहां वे अपनी ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों में लगा सकें। सामाजिक सेवा, स्वास्थ्य-जागरूकता, रक्तदान, पर्यावरण संरक्षण, वृद्धजन सेवा और नशा-मुक्ति जैसे विषय युवाओं को समाज के विभिन्न पक्षों से परिचित करवाते हैं।

इन गतिविधियों से केवल सेवा की भावना ही विकसित नहीं होती, बल्कि नेतृत्व, टीमवर्क, संवाद, अनुशासन और जिम्मेदारी जैसे गुण भी विकसित होते हैं।

जब विद्यार्थी किसी गतिविधि को स्वयं आयोजित करने या उसमें सक्रिय भूमिका निभाने लगते हैं तब वह केवल स्वयंसेवक नहीं रहता वह धीरे-धीरे एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका सीखता है।

कार्यक्रम की सफलता उसके बाद शुरू होती है

किसी भी कार्यक्रम का वास्तविक प्रभाव उस समय दिखाई देता है जब कार्यक्रम समाप्त हो चुका हो।

रक्तदान शिविर का दिन समाप्त हो गया लेकिन क्या विद्यार्थियों में रक्तदान को लेकर जागरूकता बनी रहेगी?

वृद्धाश्रम की यात्रा पूरी हो गई लेकिन क्या विद्यार्थी अपने परिवार और समाज के वरिष्ठ नागरिकों के लिए थोड़ा अधिक समय निकालेंगे?

नशा-मुक्ति का व्याख्यान समाप्त हो गया लेकिन क्या विद्यार्थी अपने जीवन और अपने मित्र-परिवेश को लेकर अधिक सजग होंगे?

मेडिकल कैंप समाप्त हो गया लेकिन क्या स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता आगे भी बनी रहेगी?

यही वे प्रश्न हैं जो किसी सामाजिक कार्यक्रम की वास्तविक सफलता को निर्धारित करते हैं।

ऐसी गतिविधियों को एक-दो अवसरों तक सीमित न रखकर पूरे शैक्षणिक वर्ष में निरंतरता देने की आवश्यकता है। भारत सरकार की NSS व्यवस्था में भी सामुदायिक आवश्यकताओं के अनुरूप विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को स्थान दिया गया है। स्वास्थ्य, रक्तदान, सामाजिक सेवा, जागरूकता, पर्यावरण और अन्य क्षेत्रों में NSS स्वयंसेवकों की भागीदारी इसी व्यापक दृष्टि का हिस्सा है। महाविद्यालय स्तर पर इन राष्ट्रीय उद्देश्यों को स्थानीय आवश्यकताओं के साथ जोड़ना विशेष रूप से उपयोगी हो सकता है। इससे विद्यार्थी अपने आसपास की वास्तविक समस्याओं को समझ पाएंगे और उनके समाधान में अपनी भूमिका खोज सकेंगे।

एक शिक्षक के रूप में मुझे लगता है कि हमें अपने विद्यार्थियों से केवल यह नहीं कहना चाहिए कि वे जीवन में सफल हों। हमें यह भी सिखाना चाहिए कि उनकी सफलता के साथ परिवार और समाज का हित भी जुड़ा है।

किसी जरूरतमंद के लिए रक्त देना, किसी बुजुर्ग के पास बैठकर उन्हें यह बताना कि हम हमेशा आपके साथ हैं, अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना या किसी सामाजिक बुराई के प्रति दूसरों को जागरूक करना — ये देखने में छोटी बातें लग सकती हैं लेकिन इन्हीं छोटी-छोटी बातों से सामाजिक चरित्र बनता है। शिक्षा ज्ञान देती है, NSS उस ज्ञान को समाज से जोड़ती है;

सेवा संवेदना जगाती है और संवेदना जिम्मेदारी का भाव पैदा करती है।

यही वह यात्रा है जिसमें विद्यार्थी केवल अच्छा विद्यार्थी नहीं बल्कि एक सजग नागरिक बनने की ओर बढ़ता है और शायद शिक्षा की सबसे बड़ी सार्थकता भी यही है कि वह हमें केवल अपने लिए आगे बढ़ना न सिखाए बल्कि दूसरों के जीवन में भी अपने हिस्से का थोड़ा-सा प्रकाश जोड़ने की प्रेरणा दे।

Dr. Indu Dutta,
Assistant Professor,
Programme officer,
NSS Unit,
PGDAV College (M),
Delhi University

पत्थर की आंखों में आंसू - टेनसा की धरती की अनकही कहानी

लेखक राकेश महांती, टेनसा
रिपोर्टडा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र

आज न जाने क्यों, उस पत्थर की आंखों में छिपे आंसू मुझे दिखाई दे गए। अचानक टेनसा बाजार की ओर जाते समय उस पत्थर की नमी भरी आंखों ने मुझे भीतर तक व्यथित कर दिया। मेरे मन में सवाल उठा कि आखिर वह पत्थर क्यों रो रहा है?

दूसरों का दुख दूर करने में मुझे हमेशा आत्मिक आनंद मिलता है। फिर इस पत्थर की आंखों से बहते आंसुओं को मैं कैसे अनदेखा कर सकता था? उसकी पीड़ा समझने के लिए मैंने टेनसा के कई निवासियों और बुजुर्गों से बातचीत की। लोगों ने बताया कि इस पत्थर का दर्द समझने के लिए हमें कई दशक पीछे लौटना होगा और इस क्षेत्र के इतिहास को जानना होगा।

देश की स्वतंत्रता के बाद राउरकेला में पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा इस्पात कारखाने की स्थापना हुई। जर्मन तकनीक से निर्मित इस कारखाने के लिए लौह अयस्क की आपूर्ति सुनिश्चित करने के उद्देश्य से विशेषज्ञों की एक टीम बरसुआं की घाटी तक पहुंची। घने जंगलों, पहाड़ों और कल-कल बहते झरनों से घिरे इस क्षेत्र में भारी मात्रा में लौह अयस्क के भंडार का अनुमान लगाया गया।

वर्ष 1954 में भारतीय खान ब्यूरो ने पूर्वेक्षण के बाद अनुमति प्रदान की। वर्ष 1955 में बरसुआं में बड़ा आधार शिविर स्थापित हुआ। 1957 में परियोजना प्रतिवेदन तैयार हुआ और 1958 में अयस्क प्रबंधन तथा चूर्णीकरण संयंत्र की जिम्मेदारी संबंधित संस्था को दी गई। वर्ष 1961 में यंत्रीकृत खनन तथा अयस्क प्रबंधन संयंत्र से उत्पादन शुरू हुआ।

समय आगे बढ़ा। वर्ष 1984 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद उनके समाधि स्थल को स्मरणीय बनाने के लिए लौह पत्थर से स्मारक तैयार करने का विचार सामने आया। देश के विभिन्न खनन क्षेत्रों से ऐसे पत्थर उपलब्ध कराने का आग्रह किया गया। तब राउरकेला इस्पात कारखाने के तत्कालीन महाप्रबंधक आर.सी. महांती ने बरसुआं लौह खदान के प्रबंधक नगेन किशोर महांती को इसकी जानकारी दी।

वर्ष 1985 में बरसुआं लौह खदान के पांचवें क्षेत्र से लगभग 35 मीट्रिक टन वजन का एक विशाल पत्थर चुना गया। इसे टेनसा से बरसुआं तक विशेष सुरक्षा व्यवस्था के बीच ले जाया गया। पत्थर को ले जाने वाले वाहन के चालक के रूप में यशवंत सिंह और लक्ष्मीकांत होता को चुना गया था। कलसी बाबू और भू-विज्ञानी कानूनगो बाबू को पत्थर को सुरक्षित पहुंचाने की जिम्मेदारी दी गई थी।

जब यह पत्थर टेनसा से बरसुआं की ओर रवाना हुआ तो केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल ने मार्ग पर सामान्य आवागमन रोक दिया था। शून्य बिंदु पार करते ही भारी वजन के कारण वाहन का पहिया फट गया। स्थिति को देखते हुए पत्थर का कुछ हिस्सा काटकर वजन कम किया गया और नया पहिया लगाकर उसे सुरक्षित बरसुआं पहुंचाया गया।

बाद में पत्थर के काटे गए उस हिस्से को टेनसा स्थित मां सारला पीठ अथवा सामाजिक केंद्र के पीछे दिल्ली स्थित शक्तिस्थल की प्रतिकृति के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया गया। मौखिक स्वीकृति भी मिली थी।

विडंबना देखिए—उसी मूल पत्थर का एक हिस्सा आज दिल्ली में सम्मान पा रहा है, जबकि दूसरा हिस्सा टेनसा में कूड़े के ढेर के बीच उपेक्षित पड़ा है।

दिल्ली में जिस पत्थर के सामने बड़े-बड़े नेता श्रद्धा अर्पित करते हैं, उसी पत्थर का एक अंश यहां अपने अस्तित्व और सम्मान की प्रतीक्षा कर रहा है।

आखिर इस पत्थर की आंखों से बहते आंसुओं को कौन देखेगा?

अब देखना यह है कि इस कहानी के सामने आने के बाद बरसुआं लौह खदान के अधिकारी अथवा जिला प्रशासन इस ऐतिहासिक पत्थर की पीड़ा समझते हैं या नहीं और उसे उसका उचित सम्मान दिलाने के लिए कोई कदम उठाते हैं या नहीं।

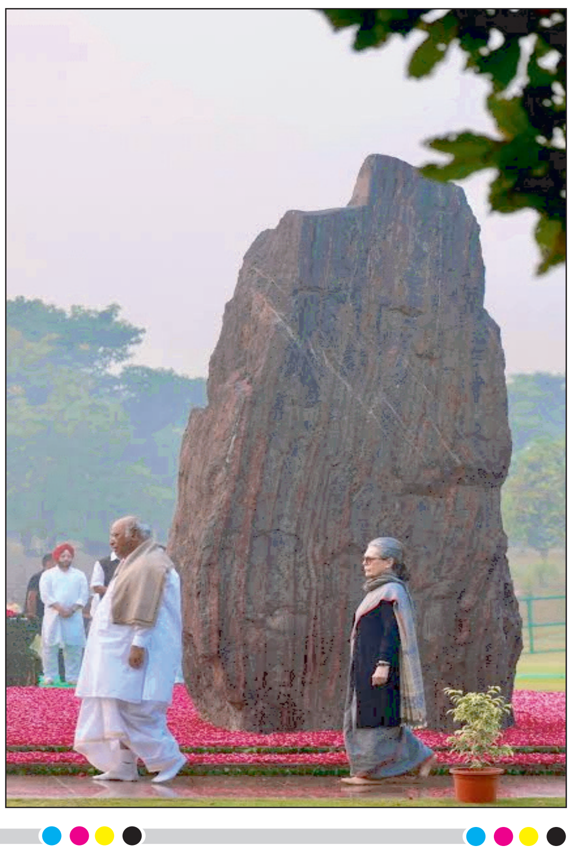

आखिरकार एनएच-143 पर शुरू हुआ सड़क निर्माण

हादसों और जाम के बीच बिरमित्रपुरवासियों को राहत की उम्मीद

लंबे समय से बदहाल सड़क, धूल, गड्ढों और यातायात अव्यवस्था से परेशान लोगों की लगातार आवाज के बाद शुरू हुआ काम

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र बिरमित्रपुर

लंबे इंतजार, लगातार शिकायतों और जनदबाव के बाद आखिरकार बिरमित्रपुर क्षेत्र से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग-143 पर सड़क निर्माण कार्य शुरू हो गया है। सड़क की बदहाल स्थिति लंबे समय से स्थानीय लोगों और वाहन चालकों के लिए परेशानी का कारण बनी हुई थी। गड्ढों, धूल और जगह-जगह खराब सड़क के कारण यातायात प्रभावित होने के साथ जाम की स्थिति भी बनती रही है।

पिछले दिनों इस मार्ग पर सामने आए सड़क हादसों ने भी सड़क सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े किए थे। भारी वाहनों की आवाजाही, संकरी एवं क्षतिग्रस्त सड़क और यातायात दबाव के बीच दुर्घटनाओं का खतरा लगातार बना हुआ था। विशेषकर व्यस्त इलाकों में पैदल यात्रियों और दोपहिया वाहन चालकों को भी जोखिम का सामना करना पड़ रहा था। स्थानीय लोगों का कहना है कि सड़क निर्माण की मांग लंबे समय से उठाई जा रही थी। शिकायतों और जनप्रतिनिधियों व प्रशासन के स्तर पर उठाए गए मुद्दों के बाद अब निर्माण शुरू होना राहत की बात है।

हालांकि, काम शुरू होना ही पर्याप्त नहीं है। लोगों की मांग है कि निर्माण में गुणवत्ता, मजबूती, उचित जल निकासी और यातायात प्रबंधन का विशेष ध्यान रखा जाए तथा कार्य निर्धारित समयसीमा में पूरा हो।

अब बिरमित्रपुरवासियों की नजर इस बात पर है कि वर्षों की परेशानी के बाद बनी यह सड़क वास्तव में सुरक्षित और टिकाऊ यातायात का आधार बन पाती है या नहीं।

मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने एमएमडीआर संशोधित कानून के पक्ष में विपक्ष को लताड़ा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, खान एवं खनिज विकास संशोधन अधिनियम 2026 को लेकर झारखंड में सियासी लड़ाई जोरदार जारी है. शनिवार केंद्रीय मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने बीजेपी प्रदेश कार्यालय में एमएम डी आर (खनिज, विकास और विनियमन) संशोधन कानून को लेकर इसके कई फायदे गिनाते हुए झारखंड सरकार पर जमकर हमला बोला. उन्होंने कहा कि एम एम डी आर संशोधन कानून के खिलाफ झामुमो, कांग्रेस और राजद नेताओं की बयानबाजी केवल जनता को गुमराह और भ्रमित करने वाली है. उन्होंने कहा कि झारखंड, खनिज संपदा से समृद्ध राज्य है. सच्चाई यह है कि इस कानून में बदलाव होने से झारखंड में नए निवेश और रोजगार के पर्याप्त अवसर बढ़ेंगे. राज्य के युवाओं को अपने ही राज्य में काम मिलने की संभावना में वृद्धि होगी और पलायन पर भी काफी हद तक रोक लगेगी केंद्रीय मंत्री ने कहा कि इस कानून का मुख्य मकसद खनन क्षेत्र में टैक्स व्यवस्था को पूरी तरह से सुसंगत और पारदर्शी बनाना है. इस संशोधन से राज्य सरकार की मनमर्जी पर लगाम लगेगी. नीलामी के बाद जिस प्रकार से राज्य की सरकार नए-नए टैक्स और सेस लगा देती थी, इस कारण कारोबारियों को काफी परेशानी होती थी, सेस एवं बकाया टैक्स के नाम पर उनके साथ दोहन और शोषण होता था, इससे उन्हें मुक्ति मिलेगी. अन्नपूर्णा देवी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 2047 के विकसित भारत को गति देने और प्रत्येक राज्य को आगे बढ़ाने के लिए कृतसंकल्पित हैं. एमएम डी आर विधेयक में संशोधन इसी कड़ी का एक हिस्सा है. इस विधेयक के माध्यम से प्रधानमंत्री का लक्ष्य पूरे देश स्तर पर एकरूपता लाना है. एमएमडीआर कानून से विकसित भारत' के साथ-साथ 'विकसित झारखंड' के विजन को भी मजबूती मिलेगी. केंद्रीय मंत्री ने कहा कि यह अधिनियम केवल झारखंड में नहीं लागू हुआ है बल्कि ओडिशा, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, केरल आदि जगहों पर भी लागू किया गया है, इसमें से कई कांग्रेस शासित राज्य हैं वहां इस अधिनियम के विरोध की बजाय स्वागत हो रहा है. केवल झारखंड में ही इसका विरोध किया जा रहा है. सभी राज्य अधिनियम के फायदे को बखूबी समझ रहे हैं.

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि जहां तक झारखंड में इसके विरोध की बात है तो यहां की सारी व्यवस्था ध्वस्त हो चुकी है. राज्य सरकार समय पर ऑक्शन नहीं कराती. झारखंड सरकार वैधानिक रूप से राजस्व नहीं चाहती है बल्कि यह व्यक्तिगत राजस्व में वृद्धि चाहती है, इसलिए इस अधिनियम का विरोध किया जा रहा है. झारखंड सरकार कोयला चोरी को बढ़ावा देने के लिए इस अधिनियम का विरोध कर रही है.

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सरकार की मंशा है कि सरकारी खजाने में राजस्व नहीं आए, सरकारी व्यवस्थाएं दुरुस्त नहीं हो, वैधानिक कारोबारी को सुविधाएं नहीं मिले, राज्य में अवैध गतिविधियां बढ़ती रहें, अवैध माइनिंग का खेल फलता-फूलता रहे, इसलिए यह सरकार इस अधिनियम का विरोध कर रही है. लेकिन राज्य सरकार की यह मंशा कदापि पूरी नहीं होगी. इस एक्ट के लागू होने के बाद लाल फीताशाही रुकेगी. मनमाने तरीके से टैक्स और सेस का जो खेल खेला जाता रहा है, उस पर लगाम लगेगी.

समुद्र ने निगल लिया तट, बहा ले गया दुकान-बाजार

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : पुरी में समुद्र लगातार तट को निगल रहा है और कई दुकान-बाजारों को बहाकर ले गया है। बढ़ती आबादी अब समुद्र की ओर बढ़ती जा रही है, वहीं दूसरी तरफ प्रकृति के अशांत रूप के कारण बस्तियां भी प्रभावित हो रही हैं। पुरी में प्रकृति के प्रकोप और इंसानी गतिविधियों के बीच संघर्ष की गंभीर स्थिति देखने को मिल रही है। जिले की 15.78 किलोमीटर भूमि समुद्री कटाव की चपेट में है। उत्तर अंडमान सागर और उससे सटे पूर्व-मध्य बंगाल की खाड़ी में बने निम्न दबाव के प्रभाव के बीच पुरी में लगातार हो रहे समुद्री कटाव ने चिंता बढ़ा दी है।

स्वर्गद्वार, लाइट हाउस, बलियापंडा, सीपसरुबाली समेत कई इलाकों में समुद्र का किनारा लगातार कट रहा है। पुरी के बलियापंडा से सीपसरुबाली तक करीब 1 किलोमीटर समुद्र तट कटाव की चपेट में है। समुद्र के अशांत होने के कारण करीब 3 फीट ऊंचे बालू के टीले कटकर गिर रहे हैं। 2 से 3 फीट ऊंची लहरें तेज गति से तट से टकराने के कारण बालू के टीले खिसक रहे हैं। लाइट हाउस क्षेत्र से मंगलामुहाना के पास स्थित समुद्र तट तक बालू के बांधों में लगातार कटाव हो रहा है।

कई स्थानों पर 3 से 4 फीट तक बालू का कटाव हो चुका है, जबकि समुद्र अब सड़क से महज 200 से 300 मीटर की दूरी पर रह गया है। ऐसी स्थिति को लेकर पर्यावरणविदों ने चिंता जताई है। ओडिशा के अधिक प्रभावित जिलों में पुरी में तटीय कटाव की दर अपेक्षाकृत कम बताई जाती है। लेकिन पुरी एक प्रमुख सांस्कृतिक, आर्थिक और पर्यटन केंद्र होने के कारण यहां के कटाव-प्रवण क्षेत्र गंभीर चिंता का विषय बन गए हैं। नेशनल सेंटर फॉर कोस्टल रिसर्च (NCCR) के तटीय रेखा आकलन संबंधी नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, पुरी जिले की 138 किलोमीटर लंबी तटरेखा में से 10.2 प्रतिशत हिस्से में सक्रिय रूप से कटाव हो रहा है। पुरी के स्वर्गद्वार से लाइट हाउस, चिलिका के दोनों किनारे, देवी नदी का मुहाना और अस्तरंगा, कोणार्क-चंद्रभागा तथा उदयकानी-केउट जंगा सहित कई इलाकों में तटीय कटाव चिंता बढ़ा रहा है।

बिरमित्रपुर में मदिरा निर्माण पर गंभीर सवाल: दस्तावेज अधूरे हैं तो अनुमति किस आधार पर?

कथित अधिक उत्पादन-विक्रय, वित्तीय बकाया और पर्यावरणीय सवालों के बीच जवाबदेही तय करने की मांग; संभावित जहरीली मदिरा त्रासदी से पहले प्रशासन की परीक्षा

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र बिरमित्रपुर

बिरमित्रपुर में संचालित बताए जा रहे मदिरा निर्माण केंद्र को लेकर अब सवाल केवल आबकारी नियमों तक सीमित नहीं रहे हैं। यदि उपलब्ध शिकायतों में से एक PMOPG/E/2026/0180969 व कई अन्य आरोपों में तथ्य हैं, तो मामला आबकारी, प्रदूषण नियंत्रण, वाणिज्यिक कर, वित्तीय दायित्व और जिला प्रशासन—सभी स्तरों की जवाबदेही से जुड़ता है।

ओडिशा की मौजूदा आबकारी व्यवस्था में मदिरा के निर्माण, परिवहन, बिक्री और राजस्व की निगरानी के साथ अवैध एवं मिलावटी मदिरा की रोकथाम को स्पष्ट प्राथमिकता दी गई है। विभाग की नीति में प्रत्येक बोतल की निगरानी के लिए मार्ग-अनुसरण व्यवस्था तथा अवैध मदिरा पर प्रवर्तन तंत्र का भी उल्लेख है।

ऐसे में पहला सवाल यही है—यदि किसी निर्माण केंद्र के आवश्यक दस्तावेज, अनुमति, नवीनीकरण अथवा अन्य वैधानिक अभिलेखों में गंभीर कमी है, तो उसके संचालन की अनुमति किस आधार पर बनी हुई है?

दूसरा सवाल कथित निर्धारित सीमा से अधिक उत्पादन और बिक्री का है। यदि उत्पादन अनुमति से अधिक हुआ है, तो उसका अभिलेख किसके पास है? उससे मिलने वाले राजस्व का हिसाब कौन करेगा? और यदि सरकारी बकाया व वित्तीय दायित्व लंबित हैं, यहां तक कि बैंक गारंटी के समाप्त हो जाने का दावा भी सामने आ रहा है, तो राजस्व की संभावित क्षति की भरपाई कौन करेगा?

तीसरा प्रश्न प्रदूषण नियंत्रण का है। निर्माण प्रक्रिया से संबंधित पर्यावरणीय स्वीकृतियां, अपशिष्ट प्रबंधन और प्रदूषण नियंत्रण मानकों का पालन हुआ या नहीं—इसकी स्वतंत्र जांच क्यों न हो?

सबसे गंभीर प्रश्न जनस्वास्थ्य का है। यदि किसी स्तर पर अवैध या मानकों से बाहर मदिरा का उत्पादन अथवा वितरण पाया जाता है और भविष्य में जहरीली मदिरा से मृत्यु होती है, तो जिम्मेदारी केवल घटना के बाद गिरफ्तार किए गए व्यक्ति तक सीमित कैसे होगी? क्या संबंधित निरीक्षण अधिकारी, पर्यवेक्षण अधिकारी और सक्षम प्राधिकारी भी अपनी वैधानिक जिम्मेदारी से मुक्त रहेंगे?

यह सवाल केवल मुख्यमंत्री, मुख्य शासन सचिव, आबकारी मंत्री, विभागीय सचिव या जिला प्रशासन के प्रमुख से व्यक्तिगत रूप से नहीं, बल्कि जवाबदेही की पूरी श्रृंखला स्पष्ट करने का है। क्योंकि यदि चेतावनियां मौजूद थीं, शिकायतें थीं और फिर भी कार्रवाई नहीं हुई, तो कल किसी की जान जाने के बाद जांच शुरू करना बहुत देर हो सकती है।

अब आवश्यकता आरोपों की नहीं, बल्कि दस्तावेजों की सार्वजनिक जांच, स्वतंत्र निरीक्षण और स्पष्ट जवाबदेही की है।

बैंक यूनियन हड़ताल से झारखंड में 60,000 करोड़ व्यापारिक गतिविधि बाधित होगा

28 से 30 सितंबर तक हड़ताल ,आरबीआई ने रविवार को भी बैंक खुला रखवाने का निर्णय लिया

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, यूनाइटेड फोरम ऑफ बैंक यूनियंस' के आह्वान पर झारखंड सहित देश भर के बैंकों में 28 से 30 सितंबर तक हड़ताल रहेगी. इस हड़ताल से झारखंड में बैंकिंग कामकाज प्रभावित होगा और इससे लगभग 60,000 करोड़ के व्यापारिक गतिविधि बाधित होने की संभावना है. इतना ही नहीं चालू वित्तीय वर्ष के छमाही का अंतिम दिन यानी 30 सितंबर को बैंक क्लोजिंग के कामकाज पर भी असर पड़ेगा. इस तीन दिवसीय हड़ताल में सार्वजनिक क्षेत्र के सभी बैंकों के कर्मचारी और अधिकारी शामिल होंगे.

इससे पहले बैंक कर्मचारियों के द्वारा विगत 11 सितंबर को एक दिवसीय हड़ताल किया गया था. हड़ताल कर रहे बैंक कर्मचारी केन्द्र सरकार से पांच दिवसीय बैंकिंग सप्ताह लागू करने, पी एल आई भुगतान की विसंगतियों को दूर करने और 8 मार्च 2024 को हुए समझौते को लागू करने की मांग को पूरा करने पर लगातार दवाब बना रहे हैं.

फोरम ऑफ बैंक यूनियंस के संयुक्त संयोजक मुनिन्द्र लाल सिंह ने कहा कि 11, 28, 29 और 30 सितंबर को अखिल भारतीय हड़ताल की घोषणा की गई है. केंद्र सरकार 8 मार्च 2024 को हुए समझौते को अब तक लागू नहीं कर पाई है, जो बेहद ही दुखद है. हमलोगों ने पांच दिवसीय बैंकिंग कारोबार के समय में भी 40 मिनट अतिरिक्त समय देकर समय का समायोजन की बात कही है. इसके बावजूद सरकार टालमटोल कर बैंक कर्मचारियों की मांग को अनदेखी कर रही है. ऐसे में यदि मांग नहीं मानी गई तो 26 अक्टूबर से अनिश्चितकालीन हड़ताल पर बैंक कर्मचारी जाएंगे, जिससे बैंकिंग कारोबार पूरी तरह से ठप होगा. उन्होंने कहा कि झारखंड में करीब 30 हजार कर्मचारी हैं जो कल 11 सितंबर को हड़ताल पर रहेंगे.

बैंक कर्मचारियों की हड़ताल को देखते हुए रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने रविवार यानी 27 सितंबर को सभी बैंकों को खोलने का निर्णय लिया है. यदि यह फैसला नहीं लिया जाता तो बैंक 26 से 30 सितंबर तक यानी लगातार 5 दिन तक बंद हो जाता. चौथा शनिवार होने के कारण बैंक पहले से ही बंद था. जिसे ध्यान में रखते हुए रविवार को बैंक की शाखा खोलने का निर्णय लिया गया है. वहीं, रांची जिला बैंक एम्पलाइज एसोसिएशन के अध्यक्ष कनक रंजन चौधरी ने कहा कि तीन दिनों के हड़ताल से करीब 60 हजार का कारोबार प्रभावित होने के आसार हैं. केन्द्र सरकार मनमानी कर रही है, जिसके कारण बैंककर्मी विवश होकर हड़ताल पर जा रहे हैं.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया कर्मचारी फेडरेशन के महासचिव दीपक कुमार गुप्ता कहते हैं कि विगत दिनों 11 सितंबर को एक दिवसीय हड़ताल के बावजूद सरकार ने सुध नहीं ली, जिससे विवश होकर फिर तीन दिनों के लिए कर्मचारी हड़ताल पर जा रहे हैं. अगर इसके बावजूद मांगें नहीं मानी जाएगी तो 26 अक्टूबर से कर्मचारी अनिश्चितकालीन हड़ताल पर जाएंगे. बता दें कि राज्य में विभिन्न राष्ट्रीयकृत, निजी, क्षेत्रीय ग्रामीण और सहकारी बैंकों की 3,200 से अधिक बैंक शाखाएं कार्यरत हैं, जिसमें निजी बैंकिंग सेवा को छोड़कर सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और ग्रामीण बैंक के कर्मचारी हड़ताल पर रहेंगे।

जल्द आएंगे पैदल यात्री सुरक्षा नियम-2026: अब पैदल यात्रियों का रास्ता होगा अतिक्रमण मुक्त, स्कूल जोन में वाहनों की रफ्तार पर लगेगी लगाम

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : अब पैदल यात्रियों के रास्ते में कोई बाधा नहीं बनेगा और सड़क हादसों में पैदल यात्रियों की जान जाने से रोकने के लिए विशेष कदम उठाए जाएंगे। केवल राजधानी में ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय और राज्य राजमार्गों पर भी पैदल यात्रियों के लिए अलग ट्रैक होगा। फुटपाथ से अतिक्रमण हटाया जाएगा। टूटे हुए स्लैब और खुले नालों की मरम्मत की जाएगी। सड़कों पर पैदल यात्रियों की सुरक्षा को लेकर सरकार ऐसी विशेष नियमावली लाने जा रही है। वाणिज्य एवं परिवहन विभाग की ओर से गुरुवार को 'ओडिशा पैदल यात्री सुरक्षा नियम-२०२६' का मसौदा जारी किया गया है। पुलिस के आंकड़ों के अनुसार, वर्ष २०२४ में सड़क दुर्घटनाओं में 735 पैदल यात्रियों की मौत हुई थी। इनमें 143 महिलाएं थीं। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय की ओर से प्रकाशित 'भारत में सड़क दुर्घटनाएं' रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष २०२२ में ओडिशा में सड़क दुर्घटनाओं में 800 पैदल यात्रियों की मौत हुई थी। साइकिल की टक्कर से २० पैदल यात्रियों की मौत हुई थी, जो पूरे देश में सबसे अधिक थी। इसी कारण सरकार ने नए नियम लाने पर जोर दिया है। नई नियमावली में स्कूल जोन में वाहनों की गति को नियंत्रित करने पर विशेष जोर दिया गया है। शहरी और ग्रामीण आबादी वाले क्षेत्रों के स्कूल जोन में वाहनों की अधिकतम गति २५ किलोमीटर प्रति घंटा होगी। वहीं, राजमार्ग या प्रमुख ग्रामीण सड़क पर स्कूल होने की स्थिति में गति सीमा 40 किलोमीटर प्रति घंटा निर्धारित की जाएगी। स्कूल और अस्पताल जोन में फुटपाथ, पैदल यात्री क्रॉसिंग, चेतावनी संकेत, गति सीमा संकेतक और यातायात की गति नियंत्रित करने वाली व्यवस्थाएं अनिवार्य होंगी।

अतिक्रमण मुक्त फुटपाथ के लिए सख्त प्रावधान।

अतिक्रमण मुक्त फुटपाथ के लिए मसौदा नियमों में कड़े प्रावधान किए गए हैं। फुटपाथ, जेब्रा क्रॉसिंग और साइकिल ट्रैक पर किसी भी तरह का निर्माण मलबा, विज्ञापन सामग्री या केबल नहीं रखा जा सकेगा। निर्धारित स्थान के अलावा फुटपाथ पर वाहन चलाना या पार्क करना प्रतिबंधित होगा।

नियमों का उल्लंघन होने पर पुलिस और प्रशासन वाहनों तथा अवरोधों को तत्काल हटाएंगे। शहर की मुख्य सड़कों, अधिक पैदल यातायात वाले कॉरिडोर और आवासीय क्षेत्रों से गुजरने वाले राजमार्गों के दोनों ओर अलग फुटपाथ बनाए जाएंगे। फुटपाथ समतल, मजबूत और फिसलन रहित होंगे। सड़क निर्माण या मरम्मत के दौरान भी कम से कम 1.5 मीटर चौड़ा अस्थायी पैदल मार्ग उपलब्ध रखना अनिवार्य होगा। जेब्रा क्रॉसिंग पर पैदल यात्रियों को प्राथमिकता

जेब्रा क्रॉसिंग पर पैदल यात्रियों को प्राथमिकता दी गई है। जहां ट्रैफिक सिग्नल काम नहीं कर रहा हो या सिग्नल मौजूद न हो, वहां चिह्नित जेब्रा क्रॉसिंग से सड़क पार करने वाले पैदल यात्रियों और साइकिल चालकों को पहले रास्ता दिया जाएगा।

यदि पैदल यात्रियों को रास्ता देने के लिए कोई वाहन रुकता है, तो दूसरा वाहन उसे ओवरटेक नहीं कर सकेगा।

साइकिल या अन्य गैर-मोटर चालित वाहन को ओवरटेक करते समय वाहन चालकों को सामान्यत: कम से कम 1.5 मीटर की दूरी बनाए रखनी होगी।

राष्ट्रीय पुत्री दिवस पर विशेष

खिलखिलाती हुई कलियां है बेटियां....।

नन्हे-नन्हे शुभ 'कदमों' से वह आती है,
संसार के इस 'आकाश' तले
हर घर में 'उजाला' भर देती बेटियाँ,
खिलखिलाती हुई 'कलियाँ' हैं बेटियाँ।

दु:ख या दर्द, हर समय हमेशा साथ देती है,
क्योंकि हमेशा से ही साथ देती हैं हमारी बेटियाँ
सिर्फ एक को नहीं, दो घरों को 'रोशन' करती हैं,
खिलखिलाती हुई 'कलियाँ' हैं बेटियाँ।

लोग भले बेटों को 'अंश' मानते हैं,
लेकिन बेटियाँ तो, 'वंशों' को सम्मान देती हैं।
आज लड़कों को अपना बनाने वालों,
आने वाला कल बेटियों का है, खिलखिलाती हुई 'कलियाँ' हैं बेटियाँ॥

लेखक – हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग नसिया इन्दौर मध्य-प्रदेश

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023